RNI:
UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

द अचीवर टाइम्स

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 209
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, बुधवार, 22 नवम्बर, 2023

एक नज़र

50 साल बाद बनी सड़क खुशी में महिलाओं ने गाए मंगल गीत

हाथरस। हाथरस में बिसावर की ग्राम पंचायत बरामई में 50 साल बाद सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ तो महिलाओं ने मंगल गीत गाकर अपनी खुशी को व्यक्त किया। करीब 220 मीटर लंबा यह रास्ता कच्चा था और कीचड़ और जलभराव की स्थिति थी। अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से गुहार लगाकर ग्रामीण उम्मीद छोड़ चुके थे और इसे अपनी नियति मान बैठे थे। वर्तमान ग्राम प्रधान शशि चौधरी ने मंगलवार को इंटरलॉकिंग कार्य का विधि विधान पूर्वक शुभारंभ किया। प्रधान प्रतिनिधि मुकेश चौधरी ने बताया कि 50 साल बाद यह निर्माण कार्य शुरू हुआ है। जिला पंचायत अध्यक्ष सीमा उपाध्याय का इसमें सहयोग रहा है। जल्द ही यह कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा।

पूजन

सड़क निर्माण कार्य शुरू होने पर गांव की महिलाओं की टोली ने मंगल गीत गाए और लड्डू का वितरित किए। ठेकेदार दीपेंद्र शर्मा, विपिन कुमार उर्फ कालू, नेक्सेराम बघेल, नेत्रपाल फौजी, मूलचंद भगत, सुनील बघेल, मनोज बघेल, राहुल चौधरी, बल्देव चौधरी, भगवानदास आदि मौजूद रहे।

जनजाति उत्सव की आखिरी शाम ने जीता दिल

लखनऊ। संगीत नाटक अकादमी में मंगलवार को जनजाति भागीदारी उत्सव की आखिरी शाम ने मौजूद लोगों का दिल जीत लिया। कलाकारों ने अंतिम दिन नृत्य व संगीत से शाम को कुछ ऐसे सजाया कि देखने वाले वाह वाह कर उठे। देश के 17 राज्यों से आए जनजाति वर्ग के लोगों ने फिर मिलने का वादा कर शहर को अलविदा कहा। समापन समारोह में उत्तराखंड का तांदी व हारूल नृत्य, झारखंड का पाइका, छत्तीसगढ़ी कर्मा व गैड़ी नृत्य, मध्य प्रदेश का गुदंब बाजा, उत्तर प्रदेश का हुरदुगुवा, गरदबाजा, राजस्थान का सहरिया स्वांग और सिक्किम का याकछ्म नृत्य कलाकारों ने पेश किया। इसके बाद आयोजकों ने कलाकार व शिल्पकारों को प्रतीक चिन्ह में मूंच से बनी गणेश जी की प्रतिमा देकर सम्मानित किया।

सरकारें प्रदूषण पर सख्ती करें : सुप्रीम कोर्ट

पराली जलाने वाले किसानों की एमएसपी रोकें: सुप्रीम कोर्ट

एजेंसी

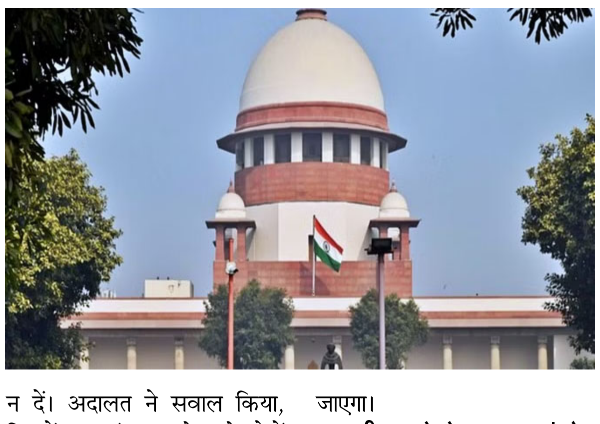

नई दिल्ली। शीर्ष अदालत ने पंजाब को सलाह दी कि वह पराली जलाने से रोकने के लिए किसानों को वित्तीय प्रोत्साहन देने के मामले में हरियाणा सरकार से सीख ले। मशीनरी वितरण के संबंध में पीठ ने राज्य और केंद्र से पूछा कि वे इसे सौ फीसदी मुफ्त क्यों नहीं करते।

कोर्ट ने पराली जलाने से राष्ट्रीय राजधानी में होने वाले प्रदूषण पर दिल्ली और पंजाब सरकार को जमकर फटकार लगाई। शीर्ष अदालत ने दोनों सरकारों से कहा, प्रदूषण रोकना आपका काम है। किसानों को खलनायक न बनाएं। शीर्ष कोर्ट ने किसानों को प्रोत्साहन देने का सुझाव देने के साथ ही पराली जलाने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने को भी कहा। पीठ ने कहा कि ऐसे किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का लाभ न दें। अदालत ने सवाल किया, नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों को आर्थिक लाभ क्यों मिलना चाहिए?

राजनीति भूलकर काम करें केंद्र और राज्य

केंद्र और राज्य सरकारों को इस मामले में राजनीति भूलकर यह पता लगाना चाहिए कि पराली जलाने पर कैसे अंकुश लगाया जाए। आरोप-प्रत्यारोप का खेल जारी रहा, तो जमीन सूख जाएगी, पानी गायब हो जाएगा।

पराली जलाने से बाज न आएं तो धान की खेती से रोकें

पीठ ने कहा कि जो किसान पराली जलाने से बाज नहीं आ रहे, उन्हें धान की फसल उगाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। गौरतलब है कि एनजीटी व शीर्ष कोर्ट के आदेश के बावजूद पंजाब में पराली जलाने पर रोक नहीं लग रही। यहां मंगलवार को भी 513 जगह पराली जलाई गई।

पंजाब सरकार को पेश की हरियाण सरकार की मिसाल

जस्टिस संजयकिशन कौल व जस्टिस सुधांशु धूलिया की पीठ ने मंगलवार को सुनवाई करते हुए उस प्रथा के खिलाफ तत्काल कार्रवाई का आदेश दिया, जिसने दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) को खराब कर दिया है। स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करते हुए अदालत ने कहा कि पिछले छह वर्ष में यह नवंबर सबसे ज्यादा प्रदूषित रहा। शीर्ष अदालत ने पंजाब को सलाह दी कि वह पराली जलाने से रोकने के लिए किसानों को वित्तीय प्रोत्साहन देने के मामले में हरियाणा सरकार से सीख ले। मशीनरी वितरण के संबंध में पीठ ने राज्य और केंद्र से पूछा कि वे इसे सौ फीसदी मुफ्त क्यों नहीं करते। पीठ ने कहा, जलाने के लिए बस एक माचिस की तीली की जरूरत होती है। मशीन देने के साथ डीजल की लागत और मैनपावर पर भी सोचें। अदालत ने पंजाब और यूपी के साथ-साथ दिल्ली सरकार से कहा, कारण पता है। समस्या वर्षों से ज्ञात है और नियंत्रित करना आपका काम है। जस्टिस धूलिया ने कहा, किसानों को अपनी समस्याएं रखने के लिए उचित मंच दिए बिना, उन्हें अपमानित किया जाता है। खलनायक बनाया जाता है। आखिर उनके पास पराली जाने के कुछ कारण होंगे। प्रश्न बहुत प्रासंगिक हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? राज्य हमें यह जवाब देने में सक्षम नहीं है।

दिल्ली-एनसीआर की हवा बहुत खराब एक्यूआई 372

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, दिल्ली एनसीआर में वायु गुणवत्ता बहुत खराब बनी हुई है। मंगलवार को दिल्ली का औसत एक्यूआई 372 दर्ज किया गया। गाजियाबाद का एक्यूआई 346, नोएडा का 330, ग्रेनो का 304, गुरुग्राम का 331, फरीदाबाद का 322 दर्ज किया गया।

EC ने दिल्ली भाजपा अध्यक्ष को भेजा कारण बताओ नोटिस

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय चुनाव आयोग ने दिल्ली के भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। आयोग ने दिल्ली मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ उनके कथित बयानों और सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर सचदेवा को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। बता दें कि आम आदमी पार्टी ने चुनाव आयोग से केजरीवाल की छवि खराब किए जाने की शिकायत की थी, जिसके बाद अब ये कार्रवाई की गई है।

चुनाव आयोग से मिला था आप का प्रतिनिधि मंडल

आम आदमी पार्टी की ओर से एक प्रतिनिधि मंडल ने सोमवार को चुनाव आयोग से मुलाकात की थी। मीडिया से बातचीत के दौरान चुनाव आयोग से मुलाकात के बाद सांसद राघव चड्ढा ने कहा था कि पहला दरवाजा चुनाव आयोग का होता है। हमें पूरा विश्वास है कि चुनाव आयोग हमारी शिकायत पर संज्ञान लेते हुए उचित से उचित कार्रवाई करेगा।

चड्डा ने की थी सख्त कार्रवाई की मांग

चड्ढा ने आगे कहा कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, आईपीसी की धाराओं और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम का उल्लंघन हुआ है। इस उल्लंघन के संदर्भ में आम आदमी पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग की है।

हो रही सीएम केजरीवाल की छवि खराब करने की कोशिश

राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा था कि सीएम केजरीवाल की छवि खराब करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा था कि भाजपा पिछले कुछ दिनों से कैंपेन चला रही है। अरविंद केजरीवाल के खिलाफ भाजपा की ओर से षड्यंत्र रचा जा रहा है। उनकी छवि को लगातार नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

आतंकवाद से मिलकर लड़ेंगे

ग्लोबल साउथ के नेता एक सुर में बोले आज का युग युद्ध का नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। आतंकवाद के खिलाफ ग्लोबल साउथ देशों के नेताओं ने एकजुटता दिखाई। साथ ही उन्होंने भावी पीढ़ी के लिए एक शांत दुनिया बनाने की भी वकालत की। ग्लोबल साउथ से जुड़े शिखर सम्मेलन इन मुद्दों पर चर्चा हुई।

वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ समिट में ग्लोबल साउथ देशों के नेता आतंकवाद के मुद्दे पर एकजुट दिखे। आतंकवाद से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। साथ ही दुनिया में चल रहे युद्ध पर चिंता जाहिर करते हुए कहा, आज का युग युद्ध का नहीं होना चाहिए।

ग्लोबल साउथ देश करेंगे आपसी मतभेद दूर

शीर्ष नेताओं ने संवाद और कूटनीतिक चर्चाओं की वकालत करते हुए ग्लोबल साउथ देशों में चल रहे मतभेदों और विकासात्मक प्रयासों पर प्रतिकूल प्रभावों पर चिंता व्यक्त की। बात दें पिछले हफ्ते शुक्रवार को भारत ने वर्चुअली ग्लोबल साउथ~ टुगेदर फॉर एवरीवन ग्रोथ, एवरीवन ट्रस्ट थीम पर शिखर सम्मेलन आयोजित किया था।

एकजुट होकर रोकेंगे आतंकवाद

शिखर सम्मेलन में सभी नेताओं ने आतंकवाद को रोकने, मुकाबला करने के लिए आपसी सहयोग को मजबूत करने की बात कही है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, नई उभरती प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग को रोकने पर चर्चाएं हुईं। मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग, राष्ट्रीय साइबर क्षमताओं का एक सुर में आह्वान किया गया। साथ ही वैश्विक शासन संरचनाओं में सुधार को भी प्राथमिकता से उठाया।

एक परिवार की तरह करेंगे काम-ग्लोबल साउथ के नेता

चर्चा के दौरान सभी नेताओं में इस बात को लेकर सहमति बनी कि विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक शांति और सुरक्षा स्थापित न हो जाए। साथ ही विवादों के निपटारे के लिए सही समाधान खोजने के लिए मजूबत प्रतिबद्धता व्यक्त की। ग्लोबल साउथ के नेताओं ने %एक परिवार% के रूप में काम करने पर भी जोर दिया। साथ ही भावी पीढियों के लिए अधिक समावेशी, न्यायसंगत, शांतिपूर्ण दुनिया बनाने पर भी सहमति बनी।

नेशनल हेराल्ड के खिलाफ कार्रवाई चुनाव के बीच बदले की भाजपा की चाल: कांग्रेस

ईडी बीजेपी की सहयोगी संस्था : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने आरोप लगाया कि अखबार की संपत्ति की कुर्की का आदेश पांच राज्यों में चल रहे विधानसभा चुनावों में अपनी तय हार से ध्यान भटकाने की भाजपा की हताशा को दिखाता है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा नेशनल हेराल्ड अखबार की संपत्ति कुर्क किए जाने के बाद कांग्रेस ने मंगलवार को जांच एजेंसी पर पलटवार किया। पार्टी ने कहा कि इस तरह की बदले की ओछी चालें उसे डरा नहीं सकती। कांग्रेस ने ईडी को भाजपा की गठबंधन सहयोगी करार दिया। धनशोधन से जुड़े मामले में जांच के दौरान एजेंसी ने समाचार पत्र की 751.9 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त करने का आदेश दिया है।

मामले को लेकर कांग्रेस के प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि संपत्ति की कुर्की का आदेश पांच राज्यों में चल रहे विधानसभा चुनावों में अपनी तय हार से ध्यान भटकाने की भाजपा की हताशा को दिखाता है। एक बयान में उन्होंने कहा कि उनका कोई भी गठबंधन सहयोगी (सीबीआई, ईडी या आयकर विभाग) भाजपा की तय हार को नहीं रोक सकता है। बदले की ये ओछी चालें कांग्रेस को किसी भी तरह से नहीं डरा सकती हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की आवाज नेशनल हेराल्ड को चलाने वाली कंपनियों की संपत्तियों की कुर्की और जब्ती को जायज ठहराया जा रहा है, क्योंकि यह (अखबार) कांग्रेस पार्टी और उसकी विरासत से जुड़ा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि ईडी की कार्रवाई का मकसद चुनाव के बीच लोगों का ध्यान भटकाना है। उन्होंने कहा, %यह कोई अपराध की आय नहीं है। हकीकत में ऐसा कोई भी शिकायतककर्ता नहीं है, जो धोखा दिए जाने का दावा करता हो, एक भी नहीं। यह चुनाव के बीच में लोगों का ध्यान भटकाने के लिए छल और झूठ का पहले से बनाया हुआ एक ढांचा है। वहीं, ईडी ने एक बयान में कहा कि जांच एजेंसी ने एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) और यंग इंडियन (वाईआई) के खिलाफ धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत अस्थायी कुर्की का आदेश जारी किया। एजेंसी ने कहा कि उसने धनशोधन के मामले में 751.9 करोड़ रुपये की संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क करने का आदेश जारी किया है। केंद्रीय जांच एजेंसी ने बयान में यह भी आरोप लगाया है कि कांग्रेस के शेयरधारकों और दानदाताओं को एजेएल और पार्टी के पदाधिकारियों ने धोखा दिया। इसने कहा, जांच से पता है कि एजेएल के पास दिल्ली, मुंबई और लखनऊ जैसे देश के कई शहरों में 661.69 करोड़ रुपये की अचल संपत्तियों के रूप में अपराध की आय है। एजेंसी ने कहा, वाईआई के पास एजेएल के इक्विटी शेयरों में निवेश के रूप में 90.21 करोड़ रुपये की अपराध आय है।

रईसजादों ने एएसपी मां के सामने इकलौते बेटे को एसयूवी से रौंदा, दो गिरफ्तार

एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ में गोमतीनगर विस्तार में जनेश्वर मिश्रा पार्क के पास जी-20 मार्ग पर मंगलवार सुबह रईसजादों की तेज रफ्तार एसयूवी ने स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) में तैनात एडिशनल एसपी श्वेता श्रीवास्तव के इकलौते बेटे को टक्कर मार दी। मां के सामने ही स्केटिंग कर रहे मासूम की मौत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि नामिष करीब 15 फीट उछला और फिर एसयूवी के बोनट पर बायीं तरफ गिरा। फिर भी चालक ने एसयूवी नहीं रोकी और भाग निकला। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से दस घंटे में कार चालक सपा के पूर्व जिला पंचायत सदस्य के बेटे और उसके साथी को गिरफ्तार कर एसयूवी बरामद की ली। गाजीपुर थानाक्षेत्र के संजय गांधीपुरम निवासी श्वेता श्रीवास्तव का नौ साल का बेटा नामिष सेंट फ्रांसिस की गोमतीनगर शाखा से तीसरी कक्षा का छात्र था। श्वेता उसे सुबह साढ़े पांच बजे जनेश्वर मिश्रा पार्क में स्केटिंग का अभ्यास करवाने ले गई थी। नामिष व उसका एक साथी कोच के साथ जी-20 मार्ग पर स्केटिंग कर रहे थे। श्वेता सड़क के दूसरी तरफ थीं। इसी दौरान शहीद पथ की ओर से आई तेज रफ्तार एसयूवी ने नामिष को जोरदार टक्कर मार दी। खून से लथपथ नामिष को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद हरकत में आई पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से शाम को इंदिरानगर सेक्टर-12 निवासी सार्थक सिंह और उसके दोस्त देवश्री वर्मा को गिरफ्तार किया गया। जांच में सामने आया कि देवश्री कानपुर निवासी सराफ चाचा अंशुल वर्मा की एसयूवी लेकर सुबह निकला था। हादसे के वक्त एसयूवी सार्थक चला रहा था। सार्थक एमिटी यूनिवर्सिटी में एलएलबी तृतीय वर्ष व देवश्री रामस्वरूप विवि में बीटेक तृतीय वर्ष के छात्र हैं। वहीं सार्थक के पिता रविंद्र सिंह उर्फ पप्पू बाराबंकी के रामनगर से सपा से जिला पंचायत सदस्य रहे हैं। इस मामले में पुलिस ने दोनों आरोपियों पर गैर इरादतन हत्या की धारा में एफआईआर की है। डीसीपी पूर्वी आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि मामले में साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं।

बमुश्किल बची मां-बेटी की जान

डीसीपी ने बताया कि जब देवश्री शहीद पथ की तरफ एसयूवी लेकर गया था तब बीच में एक मां-बेटी जा रही थीं। वह दोनों एसयूवी की चपेट में आते-आते बच गई थीं। पुलिस ने उनसे संपर्क किया। मां-बेटी ने एसयूवी की रफ्तार के बारे में जब बताया तो उनके चेहरे पर दहशत साफ दिख रही थी। पुलिस का कहना है कि अब तक जो साक्ष्य सामने आए हैं, उससे स्पष्ट है कि हादसे की वजह रफ्तार थी।

आरोपी बोले... पता था कि बच्चा मर गया

पुलिस ने दोनों आरोपियों से सख्ती से पूछताछ की। तब वह बोले कि जिस तरह से टक्कर लगी थी, उससे उन्हें पता था कि बच्चा बचेगा नहीं। वह मर गया है। इसी के चलते उन्होंने गाड़ी नहीं रोकी। वहां से भागने के बाद सुषमा अस्पताल के पास पहुंचकर एसयूवी रोककर उसका मुआयना किया कि डैमेज कहां हुआ है। कुछ देर बाद जब सोशल मीडिया पर हादसे की खबर चली तब उनको पता चला कि हादसा कर जिस बच्चे की जान ली है वह पुलिस अधिकारी का बेटा है। इसलिए वह बचने की फिराक में जुट गए थे।

खून से लथपथ बेटे को देख मां का दिल हुआ लहूलुहान

श्वेता खुशी-खुशी बेटे को लेकर मंगलवार भोर घर से निकली थीं। नामिष स्केटिंग कर रहा था और श्वेता टहलते हुए फोन पर बात कर रही थीं। सबकुछ ठीक था। तभी अचानक जिगर के टुकड़े को एसयूवी ने टक्कर मार दी। खून से लथपथ बेटे को देख श्वेता का दिल लहूलुहान हो गया। दिमाग सुन्न हो गया। वह समझ नहीं पा रही थीं करें तो क्या करें। फिर बेबसी में एक मां दहाड़ मारकर चीखने चिल्लाने लगी। जो भी वहां से गुजरा वह ये देख गम में डूब गया। इकलौते बेटे की मौत मां-बाप को जिंदगी भर का गम दे गई। नामिष को स्केटिंग का शौक था। वह हर दिन मां के साथ जनेश्वर मिश्र पार्क में स्केटिंग करने जाता था। मंगलवार को पार्क परिसर के बाहर रोड साइड में स्केटिंग का अभ्यास था। इसलिए नामिष व एक किशोर को लेकर कोच जी-20 मार्ग पर निकले थे। इसी दौरान हादसा हो गया। नामिष टीम अवध में शामिल होकर स्केटिंग करता था। टीम के मुख्य कोच दिव्यांश अरोड़ा हैं। मगर वह मंगलवार को नहीं आए थे। उनकी जगह दूसरे कोच गौरव बच्चों को अभ्यास करा रहे थे। हादसे के बाद जब दिव्यांश से संपर्क किया गया तो एक बार कॉल रिसीव करने के बाद बिना बातचीत के ही उन्होंने कट कर दिया।

होड़ लगा 150 की रफ्तार में दौड़ाई एसयूवी निगल गए मासूम की जान

मासूम नामिष की जान लेने वाले रईसजादों पर रफ्तार का जुनून चढ़ा था। दोनों ने होड़ लगा रखी थी कि कौन सबसे तेज एसयूवी दौड़ाएगा। जब सार्थक सिंह एसयूवी चला रहा था तो रफ्तार 150 पार हो गई थी। मामूली से मोड़ पर एसयूवी बिल्कुल किनारे तक पहुंची और नामिष को चपेट में ले लिया। इस तरह रफ्तार का कहर नामिष की जान निगल गया। हादसे को अंजाम देने वाले सार्थक और देवश्री एक ही मोहल्ले में रहते हैं। देवश्री के पिता सराफ हैं। डीसीपी पूर्वी आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि देवश्री के कानपुर निवासी चाचा अंशुल उसके घर आए हुए थे। उनकी ही एसयूवी लेकर देवश्री मंगलवार भोर करीब चार बजे घर से निकला था। साथ में सार्थक भी था। इधर-उधर घूमने के बाद दोनों जी-20 तिराहे पर पहुंचे थे।

दोनों ने होड़ लगाई कि देखते हैं कौन ज्यादा तेज गाड़ी चलाएगा। सबसे पहले देवश्री ड्राइविंग सीट पर बैठा और शहीद पथ तक एसयूवी दौड़ाई। वापसी में शहीद पथ से सार्थक ने स्टेयरिंग संभाली। रफ्तार के जुनून में वह एक्सीलरेटर दबाता रहा। रफ्तार 150 पार हो गई। वह नियंत्रण खोया ही था कि जी-20 तिराहे से करीब आठ सौ मीटर पहले स्केटिंग कर रहे नामिष को टक्कर मार दी। पूछताछ में सार्थक व देवश्री ने होड़ लगाकर एसयूवी दौड़ाने की बात कुबूल की है। डीसीपी ने बताया कि हादसे के बाद भी वह काफी रफ्तार में ही एसयूवी भगाकर ले गया था।

बैंक से रोजगारपरक योजनाओं के लिए ऋण प्राप्त करने वाले उद्यमियों व व्यवसायियों को सम्मानित किया जाए: एस0पी0 वशिष्ठ

❖ संकल्प यात्रा के दौरान स्कूली बच्चों द्वारा प्रभातफेरी निकाली जाये और क्विज प्रतियोगिताओं के साथ निपुण उत्सव का आयोजन कराया जाये:निदेशक, नेशनल मिशन ऑन क्लीन गंगा।

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। विकास भवन स्थित स्वर्ण जयंती सभागार में विकसित भारत संकल्प यात्रा के संबंध में एस0पी0 वशिष्ठ, अधिशासी निदेशक, नेशनल मिशन ऑन क्लीन गंगा भारत सरकार की अध्यक्षता में वृहद समीक्षा बैठक आयोजित हुई। नोडल अधिकारी ने कहा कि भारत संकल्प यात्रा के दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा कैम्पों के माध्यम से निःशुल्क हेल्थ चेक अप होगें और समाज कल्याण विभाग द्वारा पेंशन व अन्य कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित स्टॉल लगाये जायेगें एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कराने के साथ लोगों को नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से जागरूक किया जाए। उन्होने कहा कि संकल्प यात्रा के दौरान शिक्षा विभाग के स्कूली बच्चों द्वारा प्रभातफेरी निकाली जायेगी और क्विज प्रतियोगिताओं के साथ निपुण उत्सव का आयोजन किया जायेगा तथा निपुण बच्चों के अभिभावकों को सम्मानित किया जाए। व्यक्तिगत शौचालयों व सामुदायिक शौचालयों की क्रियाशीलता पर जोर दिया जाए। सहकारिता विभाग द्वारा नए सदस्य बनाये जाएं। नैनो यूरिया का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए। महिला एवं बाल कल्याण विभाग द्वारा गोदभराई व अन्नप्राशन के कार्यक्रम कराए जाएं। कन्या सुमंगला योजना आदि के बारे में लोगों से संवाद किया जाए। बैंक से रोजगारपरक योजनाओं के लिए ऋृण प्राप्त करने वाले उद्यमियों व व्यवसायियों को सम्मानित किया जाए।

नोडल अधिकारी ने कहा कि ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी को लेकर लोगों को जागरूक किया जाए और कार्यक्रम स्थल पर ईकेवाईसी का कार्य कराया जाए। पशुपालन विभाग द्वारा गाँव में टीकाकरण कराया जाए। पशुपालन से संबंधित योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाए। पूर्ति विभाग द्वारा अंत्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्ड धारकों से संवाद किया जाए। उज्ज्वला योजना के अंतर्गत नए पात्र लाभार्थियों का पंजीकरण कराया जाए। कार्यक्रम स्थल पर मिशन शक्ति का स्टॉल लगाया जाए तथा महिलाओं को उनके अधिकारों को लेकर जागरूक किया जाए। सभी समितियां अपने दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करें। दायित्वों के लिए रिजर्व अधिकारी रखे जाएं। कार्यक्रम के महत्वपूर्ण फोटो व वीडियो पोर्टल पर अपलोड करें। नोडल अधिकारी कुछ कार्यक्रमों में स्वयं उपस्थित रहें। सुरक्षा की उचित व्यवस्था की जाए। कार्यक्रम के लिए किसी बड़े स्थान का चयन किया जाए। जनप्रतिनिधियों को कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि शासनादेश का जनपद में पूरी तरह से अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। प्रत्येक कार्य के लिए जिला स्तर से लेकर ग्राम स्तर तक समितियों का गठन किया गया है। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह, पुलिस अधीक्षक केसी गोस्वामी, मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरुरानी, अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, नगर मजिस्ट्रेट प्रशान्त तिवारी, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार व सभी जिला स्तरीय अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

एकमुश्त समाधान योजना के तहत ग्राम अहिंडर में कैम्प लगाया गया

द अचीवर टाइम्स, निखिल मिश्रा

रहीमाबाद/लखनऊ। उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ के जालामऊ बिजली घर में अवर अभियंता अजीत कुमार की अध्यक्षता में एकमुश्त समाधान योजना के तहत ग्राम अहिंडर में कैम्प लगाया गया। कैम्प में पहुंचकर एकमुश्त समाधान योजना का लाभ पाने के लिए बकाया बिल जमा करने के लिए विद्युत उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन करवा। इसके साथ ही गलत बिलों का संसोधन कर सही किया गया। कैम्प के दौरान 50 से अधिक विद्युत उपभोक्ताओं ने एक मुफ्त समाधान योजना का लाभ लिया। जिसमें 37 बकायदार उपभोक्ताओं के रजिस्ट्रेशन हुए। अवर अभियंता अजीत कुमार ने कहा कि सरकार द्वारा बिजली बिल में ब्याज माफी योजना 31 दिसंबर के लिए तीन चरणों में शुरू की गई है जिसका पहला चरण 8 नवंबर से शुरू हो गया है जो 30 नवंबर तक चलेगा दूसरा चरण 1 दिसंबर से 15 दिसंबर और तीसरा चरण 16 दिसंबर से 31 दिसंबर तक जारी रहेगा। जिसमें बिजली बिल के बकाया उपभोक्ताओं को बिल जमा करने पर ब्याज माफी योजना का लाभ मिलेगा। मंगलवार को जालामऊ बिजली के घर के अंतर्गत ससपन फीडर के ग्राम अहिंडर में लगे कैंप में बड़ी संख्या में विद्युत उपभोक्ता पहुंचे। इस दौरान तीन दर्जन से अधिक उपभोक्ताओं ने लाभ पाने के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। कैम्प में करीब 3 लाख रुपए जमा हुए और अवर अभियंता अजीत कुमार ने विद्युत बकायेदार उपभोक्ताओं से अपील करते हुए कहा कि सरकार द्वारा जारी की गई एकमुश्त समाधान योजना का लाभ उठाकर भविष्य में हो सकने वाली किसी भी कार्रवाई से बचे और इस योजना का भरपूर प्रचार प्रसार करें ताकि बिजली बिल के बकायेदार उपभोक्ताओ को इस योजना का लाभ मिल सके। इस मौके पर विधुतकर्मी मनीष यादव, सौरभ वर्मा, दुर्गेश त्रिपाठी, रामदीन, सुनील रावत, पंकज कुमार आदि उपस्थित रहें।

एक नज़र

बछरावां सीएससी में बेखौफ दबंगो की डाक्टर से गाली गलौज

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। बेखौफ दबंगों का आतंक बछरावां सीएचसी में तैनात डॉक्टर गणनायक पांडे के साथ एक दर्जन से अधिक दबंगों ने की गाली गलौज करते हुए दी जान से मारने की धमकी, डा ने बताया कि कुछ लोग ईलाज कराने के लिए आए थे तो मैंने कहा कि यहां पर हड्डी का डॉक्टर नही है बस उतनी सी बात में वो लोग हंगामा करने लगे और भय का माहौल बना दिया था द्य वहां मौजूद लोगों ने डॉक्टर गणनायक पांडे को जिला अस्पताल में कराया भर्ती, आरोपी की तालाश जारी।

महमूदाबाद के ब्यस्तम रामकुण्ड चौराहे पर हुआ भीषण सड़क हादसा

मृतक फाइल फोटो

द अचीवर टाइम्स सुशीलअवस्थी

सीतापुर। महमूदाबाद के सबसे ब्यस्तम रामकुंड चौराहा पर तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक ने श्रवण बैट्री के संचालक श्रवण वर्मा जी के सुपुत्र शुभम वर्मा को टक्कर मारकर ट्रक घिसटता हुआ काफी दूर तक चला गया जिससे मौके पर ही मौत हो गयी ,ट्रक चालक ट्रक को भागता हुआ देख स्थानीय नागरिकों की मदद से पुलिस के हवाले कर दिया गया ,और लास का पंचनामा कर पोस्मार्टम हेतु सीतापुर भेज दिया गया।

युवक की नृशंस हत्या को लेकर परिजनों ने किया रोड जाम

अचीवर टाइम्स सुधांशु अवस्थी

सीतापुर। बीते सोमवार को मछरेहटा थानान्तर्गत भदेभर ग्राम पंचायत के मजरा बेहडा मे दिनदहाड़े हुयी हत्या को लेकर मंगलवार को परिजनों ने पुलिस पर आरोप लगाते हुए रोड जाम किया । पोस्टमार्टम के बाद जैसे ही शव गांव पहुंचा तो लोग उत्तेजित हो गए और कहा कि पुलिस प्रशासन ने जबर्दस्ती तहरीर मे एक ही व्यक्ति का नाम लिखवाया है । सूचना पाकर भारी पुलिस फोर्स के साथ सीओ सुशील यादव मौके पर पहुंचे । परिजन तहरीर मे दो नाम और जोड़ने पर अड़े हुए थे काफी जद्दोजहद के बाद पुलिस ने परिजनों की बात मान ली तब शव का अंतिम संस्कार हो पाया । इस बीच प्रजापति समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष प्रजापति भी पहुंच गए। उन्होने पुलिस प्रशासन से न्याय करने की बात कही जिस पर क्षेत्राधिकारी ने पूरा सहयोग करने की बात कही तब जाकर मामला सुलझ पाया । परिजन अंतिम संस्कार होने तक पुलिस प्रशासन से उलझते ही रहे।

श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन में प्रशांत अवस्थी मंडल अध्यक्ष नियुक्त

द अचीवर टाइम्स निखिल मिश्रा

लखनऊ। श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन में लखनऊ के पत्रकार प्रशांत अवस्थी को मंडल अध्यक्ष नियुक्त किया गया। आपको बता दें कि श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन के नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष प्रशांत अवस्थी ने कहा कि हमारा संगठन पत्रकारों के हक की लड़ेगा लड़ाई। श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन के सात जनपदों की कमान संभाल रहे पत्रकार प्रशांत अवस्थी ने खास बात चीत में बताया कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। पत्रकार समाज का दर्पण होते हैं, विपरीत परिस्थितियों में भी सच्चाई को सामने लाते हैं। ग्रामीण अंचल में पत्रकारिता बड़ी चुनौती है। पत्रकारिता प्राचीन समय से ही समाज को दिशा देती आ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ी छोटी सी खबर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करती है। पत्रकार मजलूमों की ताकत हैं, अपनी कलम के दम पर पीड़ितों को न्याय दिलाते हैं।अवस्थी ने कहा कि हम बिना भेदभाव के एक साथ संगठित होकर पत्रकार हित की लड़ाई लड़ेंगे।निश्चित तौर पर संगठन की अति आवश्यकता है। बिना भेदभाव के संगठित होकर कार्य करने की जरूरत है।वर्तमान की स्थितियां पत्रकार के लिए घातक साबित हो रहा है जिसे दूर करने के लिए संगठित होना पड़ेगा। जिले में तमाम पत्रकार संगठन काम कर रहे हैं हमें किसी से कोई बैर नहीं है हम सभी पत्रकार एक दूसरे का सहयोग करें और अपने हित की लड़ाई को लड़ें।

एक साथ चार मासूमों की जान जाने से आहत पिता ने किया खुदखुशी का प्रयास

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। बारासगवार थाना क्षेत्र के ग्राम लालमन खेड़ा निवासी वीरेंद्र कुमार पुत्र स्व द्वारिका प्रसाद के घर पर फर्राटा पंखे में बीते दिन विधुत प्रवाह होने के कारण वीरेंद्र कुमार के चार मासूम बच्चों की जान चली गयी थी जिससे आहत पिता ने आज जहरीला पदार्थ निगल लिया थाना बारा सगवर के लालमन खेड़ा में विद्युत करंट के प्रभाव के चलते अपनी चार संताने खो चुके पिता वीरेंद्र ने खाया जहर जिसे पहले सीएचसी बीघापुर ले जाया गया हालत में सुधार न होने पर परिजन जिला अस्पताल लेकर पहुंचे जहा पर डॉक्टरों ने हालत चिंताजनक बताई है।

बाबा खाटू श्याम की विशाल यात्रा एवं भजन संध्या

द अचीवर टाइम्स सुशील अवस्थी

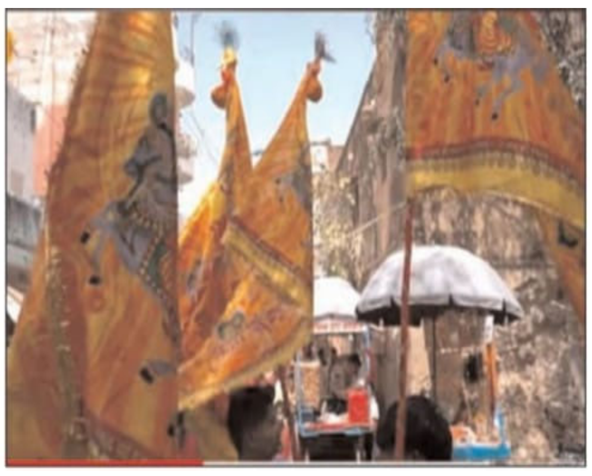

सीतापुर । महमूदाबाद में स्थानीय खाटू श्याम सेवा समिति के तत्वाधान में आगामी 23 नवंबर 2023 को महमूदाबाद नगर में खाटू श्याम बाबा की जन्मदिवस के उपलक्ष में विशाल निशान यात्रा निकाली जाएगी एवं ठठेरी बाजार स्थित श्री राधा कृष्ण मंदिर पर खाटू श्याम बाबा का जन्मदिन मनाया जाएगा और बजाजा चौराहे पर रात्रि में श्याम भजन सन्ध्या का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा महमूदाबाद नगर में द्वितीय बार निशान यात्रा व खाटू श्याम बाबा जन्मोत्सव मनाया जा रहा है श्री खाटू श्याम सेवा समिति के महामंत्री विजय प्रकाश अग्रवाल ने बताया कि इस बार महमूदाबाद के रामकुंड चौराहे पर स्थित हनुमान मंदिर से दोपहर 11~00 से निशान यात्रा प्रारंभ होगी जो रामकुंड चौराहे से चलकर दुर्गा मंदिर होते हुए बस स्टॉप होते हुए चिकमंडी चौराहा से वापस ठठेरी बाजार स्थित राधा कृष्ण मंदिर पहुंचेगी वहां पर श्याम प्रेमियों द्वारा मंदिर में निशान समर्पित किए जाएंगे निशान समर्पण के उपरांत बाबा श्याम का केक काटकर जन्मोत्सव मनाया जाएगाएवं प्रसाद वितरण के उपरांत स्थानीय बाजार चौराहे पर विशाल भजन संध्या का आयोजन 7~30 किया गया है सभी श्याम प्रेमियों से निवेदन है कि बाबा खाटू श्याम के जन्मोत्सव पर आयोजित महोत्सव में श्रद्धा भक्ति एवं लगन के साथ भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह को सराहनीय सेवा हेतु मिला भारत सरकार द्वारा पुलिस पदक एवं प्रशस्ति पत्र, हुए सम्मानित

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह को वर्ष 2022 के स्वतंत्रता दिवस पर सराहनीय सेवा हेतु पुलिस पदक देने की घोषणा भारत सरकार द्वारा की गई थी। उक्त पुलिस पदक चिन्ह अपर पुलिस महानिदेशक लखनऊ जोन लखनऊ पीयूष मोर्डिया द्वारा पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह को लगाकर सम्मानित किया गया तथा प्रशस्ति पत्र भी दिया गया। पुलिस अधीक्षक बाराबंकी को यह पदक एवं प्रशस्ति पत्र मिलने पर जनपद के समस्त पुलिस कर्मियों में हर्ष एवं उल्लास है।

कंस का वध होते ही पंडाल में गूंजे जय कन्हैया लाल की के गूंजे जयकारे

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। विकास खंड सिकंदरपुर सरोसी क्षेत्र के उम्मेद खेड़ा (बंधवा) में बजरंगली बाबा मंदिर प्रांगण में आयोजित समारोह में रासलीला में सोमवार रात वृंदावन से आए कलाकारों ने कंस वध का मंचन किया। कंस का वध होते ही पंडाल में जयकारे गूंजने लगे। रासलीला के कलाकारों ने कंस वध का मार्मिक चित्रण किया। दिखाया कि द्वापर युग में मथुरा के राजा कंस का अत्याचार चरम पर पहुंच गया था। प्रजा ही नहीं, ऋषि-मुनि भी कंस के आतंक से आहत थे और उसके आतंक से मुक्ति चाहते थे। तभी मां देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं। मथुरा का राजा कंस अपने भांजे भगवान श्रीकृष्ण को अपना शत्रु मानता था। उनको मार डालने के लिए कंस राक्षसी पूतना व कागासुर, बकासुर, नागासुर, बगुलासुर आदि राक्षसों को भेजता है। लेकिन, श्रीकृष्ण सभी को मारकर स्वधाम भेज देते हैं। युवा होने पर श्रीकृष्ण को एक दिन राजा कंस ने अपने महल में बुलाया और मार डालने के लिए ऐरावत हाथी को लगाया, लेकिन वह भी मारा गया। उसके बाद मल्ल युद्ध हुआ उसमें भी श्रीकृष्ण को खरोंच तक नहीं आई। आखिर में भगवान श्रीकृष्ण कंस का वध कर देते हैं। कंस वध होते ही पंडाल में जय कन्हैया लाल की के जयकारे गुंजायमान होने लगते हैं। इस अवसर पर दुर्गा प्रसाद प्रधान अतरी राम सिंह राजेंद्र पूर्व प्रधान हजारों लोग मौजूद रहे।

घूसेस्वर महादेव मंदिर प्रांगण में नशा मुक्ति सड़क सुरक्षा व जन जागरण कार्यक्रम किया गया आयोजित

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। विकास खंड सिकंदरपुर सरोसी क्षेत्र के मजरा भदेवना के आंट में जिलापूर्ति अधिकारी पूर्ति निरीक्षक शैलेंद्र सिंह के निर्देश पर भदेवना पूर्व प्रधान की अगुवाई में प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नंदन वन उन्नाव के द्वारा आंट गांव घूसेस्वर महादेव मंदिर प्रांगण में नशा मुक्ति सड़क सुरक्षा वा जन जागरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता प्रभारी बी के कुसुम ने अपने सहयोगियों के साथ कहा कि आज घर घर नशा कुरीतियों के कारण दुःख अशांति व गरीबी बढ़ रही है जीवन का महत्व भुलाकर गर तुम व्यसनों को गले लगाओगे खुद अपने हाथों से अपने घर को आग लगाओगे। ऐसे में आध्यात्मिक सशक्तिकरण भी एकमात्र उपाय है जिसे हम मन बुद्धि से सशक्त हो सकते हैं और अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं व्यसन ने शरीर को खोखला बना दिया है। नंदन वन उन्नाव से बी के ज्योति बी के सीमा बी के रजनी बी के दयाशंकर बी के गिरीश चंद्र बी के मनोज कुमार यह आयोजन पूर्व प्रधान हुबलाल वर्मा की देख रेख में आयोजित किया गया इस मौके पर कुंवर पाल सैलेंद्र सिंह सुखवीर यादव हरिशचंद्र रवि शंकर श्यामू सदस्य दिनेश कुमार कमलेश भगत देवी बाबा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

सेमरामऊ गांव मे चोरों ने जेवर नगदी समेत लाखों का सामान उड़ाया

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

काकोरी लखनऊ । काकोरी थाना क्षेत्र के सेमरामऊ गांव मे चोरों ने एक घर में धावा बोलकर लाखों के माल पर हाथ साफ कर दिया घर पर लोग सोते ही रह गए चोरों ने हाथ साफ कर दिया सेमरामऊ गांव में रहने वाले रामनरेश सिंह स्वर्गीय बाबूराम के घर में चोरों ने घर में रखे जेवरात और नगदी समेत अन्य सामान भी ले गए सुबह जब घर वालों ने समान बिखरा देखकर घर वालों ने पुलिस को सूचना दी घर में रखे कीमती सामान उठाकर चोर देर रात मकान के दूसरे दरवाजे के पास दीवार तोड़ के दरवाजे की कुंडी खोलकर घर में रखें सामान को बाहर निकाल के ले गए घर से लगभग 100 से 150 मीटर की दूरी पर ले जाकर बक्से को वहीं पर कीमती जेवरात और नगदी रखी हुई सामान को ले गए परिजनों ने बताया की एक जोड़ी झुमकी दो तोला हार चार अंगूठी नग चार चैन एक तोला मंगलसूत्र एक नग पांच लॉकेट का माला एक तोला पायल तीन जोड़ी अंगूठी कंगन दो तोला एक मांग टीका ?40000 नगदी समेत अन्य कीमती सामान उठाकर ले गए पीड़ित ने पुलिस को घर में चोरी होने की तहरीक थाने में दी

पीजीआई में लिवर कैंसर की लेप्रोस्कोपिक से की अब तक की सबसे जटिल सर्जरी

❖ लखनऊ पीजीआई में पहली बार हुई ऐसी जटिल सर्जरी लेप्रोस्कोप से 12 घंटे में सर्जरी।
❖ गोरखपुर के 27 वर्षीय शिक्षक को एक हफ्ते बाद छुट्टी दी

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। पीजीआई के डॉक्टरों ने लिवर कैंसर से पीड़ित 27 वर्षीय मरीज का लेप्रोस्कोप से जटिल ऑपरेशन कर नया जीवन दिया है। डॉक्टरों का दावा है कि संस्थान में पहली बार लेप्रोस्कोपिक मेजर लिवर रिजेक्शन सर्जरी की गई। दीपावली से पहले किये गए ऑपरेशन में 12 घंटे लगे हैं। ऑपरेशन के एक हफ्ते बाद मरीज के ठीक होने पर छुट्टी दी गई है। पेशे से शिक्षक मरीज ने ऑपरेशन के तीन हफ्ते बाद स्कूल में ज्वाइन कर लिया है। पीजीआई के गैस्ट्रो सर्जरी विभाग के डॉ. अशोक कुमार द्वितीय ने बताया कि गोरखपुर निवासी मरीज कृपासिंधु शिक्षक हैं। चार माह पहले मरीज को पीलिया हुआ था। कुछ दिन बाद उल्टी और बुखार आ गया। काफी उपचार के बाद भी दर्द व बुखार के साथ पीलिया का स्तर बढ़ गया। डॉक्टर ने पीजीआई रेफर किया। यहां जांच लीवर में कैंसर निकला। डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि लेप्रोस्कोपिक सर्जरी से पेट में एक छोटा सा चीरा लगाकर आंत को पित्त नली से जोड़ा गया। ऑपरेशन के तीन दिन बाद मरीज आहार लेने लगा। डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि लेप्रोस्कोप तकनीक से ऑपरेशन की वजह से मरीज को छोटा चीरा लगाना पड़ा। दर्द व रक्तस्राव कम होने के साथ ही अस्पताल में कम दिन रुकना पड़ा।

यह हैं ऑपरेशन टीम के सदस्य

गैस्ट्रो सर्जरी विभाग के डॉ. अशोक कुमार द्वितीय, डॉ. शोमनाथ व रेजिडेंट डॉ. दिव्या जैन, डॉ. अंकित व डॉ. शात्विक, एनेस्थीसिया विभाग के डॉ. दिव्या श्रीवास्तव व डॉ.सांची के अलावा नर्सिंग टीम में संतोष, सुशीला कंचन व अभा मौजूद रहीं।

दोस्त बनकर फोन किया, फर्जी संदेश भेजकर ठगे तीन हजार

लखीमपुर खीरी। साइबर ठगों ने शिव कालोनी निवासी छात्र गगन मोहन मिश्रा को ठगी का शिकार बनाया। पीड़ित छात्र ने बताया कि ठग ने उसे 26 अक्तूबर को उसका दोस्त आदित्य बनकर फोन किया। कहा कि मैं तुम्हारे मोबाइल पर एक दूसरे नंबर से 15 हजार रुपये भेज रहा हूं। यह रुपये मेरे भाई को दे देना। पीड़ित ने बताया कि इसी समय उसके नंबर पर रुपये क्रेडिट होने का एक फर्जी मेसेज भी आ गया। मेसेज देखकर उसने ठग के बताए नंबर पर दो बार में तीन हजार रुपये भेज दिए। बाद में ठगी का एहसास हुआ तो देखा कि रुपये क्रेडिट होने का मेसेज फर्जी था। उसके खाते में 15 हजार रुपये आए ही नहीं। रुपये कटने की जानकारी पीड़ित ने बैंक में दी। परिजनों ने सदर कोतवाली में तहरीर दी। पुलिस ने धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया है। पीड़ित के पिता सुभाष चंद्र ने बताया कि ठगों ने इसी तरह कई परिचितों को ठगा है।

ISI जासूसों को फंडिंग करने वाले वसीउल्लाह को एटीएस ने किया गिरफ्तार

संवाददाता

एडीजी एटीएस मोहित अग्रवाल ने बताया कि विगत 25 सितंबर को कासगंज निवासी शैलेश उर्फ शैलेंद्र सिंह चौहान को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए नार्थ ईस्ट राज्यों के भारतीय सैन्य ठिकानों की जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

लखनऊ। यूपी एटीएस ने आईएसआई जासूस शैलेश कुमार उर्फ शैलेंद्र सिंह चौहान के सहयोगी वसीउल्लाह को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। राजधानी के राजाजीपुरम इलाके में मीना बेकरी के पास रहने वाला वसीउल्लाह साइबर अपराध के एक ऑनलाइन ग्रुप का सदस्य था, जहां वह आईएसआई एजेंट्स व साइबर हैकर्स के संपर्क मे आया था। बाद में वह आईएसआई के इशारे पर शैलेश व अन्य जासूसों को पैसा देने के लिए अपने बैंक खाते का इस्तेमाल करने लगा। एटीएस उसे कस्टडी रिमांड पर लेकर पूछताछ करेगी। एडीजी एटीएस मोहित अग्रवाल ने बताया कि विगत 25 सितंबर को कासगंज निवासी शैलेश उर्फ शैलेंद्र सिंह चौहान को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए नार्थ ईस्ट राज्यों के भारतीय सैन्य ठिकानों की जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकरण की जांच में सामने आया कि लखनऊ के राजाजीपुरम में रहने वाला वसीउल्लाह भी आईएसआई एजेंट्स के संपर्क में है। उसने आईएसआई एजेंट के इशारे पर शैलेश व अन्य एजेंट्स को जासूसी के लिए अपने खाते का दुरुपयोग कर हजारों रुपये भेजे थे। इस दौरान अपनी गोपनीयता को बनाए रखने के लिए वह क्रिप्टो करेंसी के माध्यम से भी डीलिंग करता था। इसकी पुष्टि होने पर उसे एटीएस मुख्यालय बुलाकर सख्ती से पूछताछ की गयी तो उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया। उसने बताया कि कमाई के लालच में वह आईएसआई की साजिश में शामिल हुआ था। आईएसआई एजेंट के कहने पर अपने बैंक खाते का दुरुपयोग कर शैलेश व अन्य एजेंट्स को जासूसी करने के बदले पैसे भेजे थे। तत्पश्चात एटीएस ने उसे यूएपीए एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से बरामद दो मोबाइल फोरेंसिक जांच के लिए भेजे जाएंगे ताकि इस नेटवर्क के बारे में जानकारी जुटाई जा सके। यह भी पता लगाया जाएगा कि वसीउल्लाह के खाते में रकम किन बैंक खातों से भेजी जा रही थी।

नवयुग की मिस फ्रेशर बनी अनन्या मिश्रा

संवाददाता

लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय में बी. ए, प्रथम सेमेस्टर की छात्राओं के लिए बी. ए तृतीय वर्ष की छात्राओं द्वारा फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो मंजुला उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सरस्वती वंदना श्रेया श्रीवास्तव ने प्रस्तुत की। उक्त कार्यक्रम के प्रथम राउंड में बी० ए० प्रथम वर्ष की 31 छात्राओं ने मंच पर रैम्प वाक में प्रतिभाग किया और अपना परिचय देते हुए अपने शौक के बारे में बताया।10 चयनित छात्राओं ने दूसरे राउंड में अपने हुनर को प्रस्तुत किया। जिसमें नृत्य, गायन,वादन और काव्य पाठ भी शामिल रहा। द्वितीय राउंड में चयनित छात्राओं ने ÷टैलेन्ट हंट÷ नामक प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इसी क्रम में तृतीय राउंड में निर्णायक मंडल द्वारा पूछे गए सवालों का उत्तर प्रतिभागियों के द्वारा दिया गया। इसमें बेस्ट ड्रेस का एवार्ड अनन्या शर्मा को तथा बेस्ट पर्सनालिटी का खिताब वर्तिका आर वर्मा को प्राप्त हुआद्य इसी क्रम में द्वितीय रनरअप दिव्यांशी मिश्रा रही तथा प्रथम रनरअप अंजलि बाजपेई और मिश फ्रेशर अनन्या मिश्रा रहीं। इस अवसर पर निर्णायक मंडल में प्रो० सृष्टि श्रीवास्तव, प्रो० संगीता कोतवाल, श्रीमती सुनीता भदौरिया उपस्थित रहीं। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में कहा कि महाविद्यालय अपनी स्थापना के समय से ही विशिष्ट गरिमा एवं अनुशासन के लिए जाना जाता है आप लोग अपने अनुशासन एवं परिश्रम से महाविद्यालय का नाम रोशन करें तथा भविष्य में अच्छे नागरिक बने, यही मेरी आप सभी छात्राओं के लिए शुभकामना है। कार्यक्रम का संचालन तृतीय वर्ष की छात्रा शताक्षी आंनद और यशप्रिया श्रीवास्तव द्वारा किया गया। फेशर पार्टी का आयोजन महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति द्वारा किया गया। सांस्कृतिक समिति के सभी सदस्य प्रो० सृष्टि श्रीवास्तव, प्रो० सीमा सरकार, डॉ० सरिता कनौजिया, डॉ० सीमा पाडे, डॉ० अपूर्वा अवस्थी, डॉ० क्षितिज शुक्ला, ऋषभ मिश्रा और आकाश मिश्रा उपस्थित रहे। इस अवसर पर महाविद्यालय की सभी सम्मानित प्रवक्ताएं छात्राएं एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

एक नज़र

14 कोसी परिक्रमा पूरी, मंदिरों में उमड़ा आस्था का समुद्र, 22 लाख श्रद्धालुओं ने की परिक्रमा

लखनऊ। कार्तिक शुक्ल पक्ष अक्षय नवमी तिथि से शुरू होने वाला कार्तिक पूर्णिमा व परिक्रमा मेला सोमवार की देर रात शुरू हुआ। हालांकि परिक्रमा आरंभ करने का मुहूर्त रात 2:09 बजे से थे लेकिन रात 9 बजते-बजते श्रद्धालुओं का कारवां परिक्रमा पथ पर उमड़ने लगा।

14 कोसी परिक्रमा के साथ शुरू हुआ कार्तिक मेला मंगलवार को पूरे शबाब पर पहुंच गया। सोमवार की रात शुरू हुई परिक्रमा पूरी हो गई। 42 किलोमीटर की परिधि में जुड़वा शहर मानव श्रृंखला से घिरा रहा। परिक्रमा पूरी होने के साथ आस्था का समुद्र सरयू तट से प्रमुख मठ-मंदिरों में दर्शन-पूजन के लिए उमड़ने लगा। देर शाम तक दर्शनार्थियों की भीड़ से समूचा मेला क्षेत्र गुलजार रहा। प्रशासन का दावा है कि करीब 22 लाख श्रद्धालुओं ने 14 कोसी परिक्रमा की है। बुधवार रात से पंचकोसी परिक्रमा का शुभारंभ होगा। कार्तिक शुक्ल पक्ष अक्षय नवमी तिथि से शुरू होने वाला कार्तिक पूर्णिमा व परिक्रमा मेला सोमवार की देर रात शुरू हुआ। हालांकि परिक्रमा आरंभ करने का मुहूर्त रात 2:09 बजे से थे लेकिन रात 9 बजते-बजते श्रद्धालुओं का कारवां परिक्रमा पथ पर उमड़ने लगा। मध्य रात्रि होते-होते लगभग 42 किलोमीटर से अधिक की परिधि में अयोध्या-फैजाबाद जुड़वा शहर को समेटे परिक्रमा पथ परिक्रमार्थियों की मानव श्रृंखला से बंध गया। प्रशासन का कहना है कि परिक्रमा मंगलवार की शाम करीब सात बजे तक चली। मंगलवार को पूरे दिन भक्त परिक्रमा पथ नापते नजर आए। वहीं परिक्रमा पूरी होते ही परिक्रमार्थियों की भीड़ पुण्य सलिला सरयू में डुबकी लगा स्नान-दान कर प्रमुख मंदिरों में दर्शन-पूजन के लिए जुट गई। प्रसिद्ध नागेश्वरनाथ, हनुमानगढ़ी, कनक भवन के साथ श्रीराम जन्मभूमि पर भोर से शुरू हुआ दर्शन-पूजन का सिलसिला देर शाम तक जारी रहा। मंगलवार होने के नाते सिद्धपीठ हनुमानगढ़ी में भीड़ का दबाव सबसे ज्यादा रहा। मंदिर सुबह 3 बजे से ही खोल दिया गया था। सुबह सात बजते-बजते भारी भीड़ के दबाव से प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए। आनन-फानन में सभी बैरियर गिराकर भीड़ नियंत्रण के लिए श्रद्धालुओं को जत्थे में दर्शन के लिए भेजा गया। दूसरी बेला होते-होते मेला क्षेत्र से श्रद्धालुओं को वापसी शुरू होने लगी।

नाम संकीर्तन से गूंजते रहे सरयू के घाट

सुबह के करीब 8 बजे थे, पूरा सरयू तट जयकारों से गूंज रहा था। घाटों पर तिल रखने की जगह नहीं थी। लाखों श्रद्धालु पुण्यार्जन की होड़ में घाटों पर बढ़े चले जा रहे थे। कुछ स्नान कर परिक्रमा शुरू करने की तैयारी में थे तो कुछ परिक्रमा पूरी करने के बाद स्नान करने आ रहे थे। हरिकीर्तन करते श्रद्धालुओं की भीड़ से घाटों पर सरयू की लहरों का प्रवाह तो था ही,आस्था का भी प्रवाह नजर आ रहा था। जल पुलिस कर्मी ध्वनि प्रसारक यंत्रों के जरिए गहरे पानी में स्नान न करने की लगातार हिदायत दे रहे थे।

वापसी के लिए जद्दोजहद करते दिखे श्रद्धालु

14 कोसी परिक्रमा पूरी करने के बाद श्रद्धालु वापसी के लिए जद्दोजहद करते नजर आए। नया घाट हाईवे पर वाहनों का काफिला लगा रहा। परिक्रमा पूरी करने के बाद यहां घर वापसी के लिए भक्तों की भारी भीड़ जुटी नजर आई। इसी तरह मंगलवार को सुबह से ही रेलवे स्टेशन पर यात्रियों का रेला उमड़ा। अयोध्या से वाराणसी और अयोध्या से लखनऊ की ओर जाने वाली ट्रेनों में यात्रियों की जबरदस्त भीड़ रही। जनरल और रिजर्व दोनों बोगियों में एक जैसा नजारा दिखा। अयोध्या-मनकापुर इंटरसिटी ट्रेन में भी यात्रियों की काफी भीड़ दिखी।

24 हजार ने किए रामलला के दर्शन

अयोध्या। रामलला के दरबार में भी दर्शन-पूजन के लिए भक्तों की भीड़ रही। दोनों पालियों में 24 हजार भक्तों ने रामलला के दरबार में हाजिरी लगाई। पहली पाली में जहां 11 हजार तो दूसरी पाली में 13 हजार भक्त रामलला की पूजा-अर्चना करने पहुंचे। श्रद्धालुओं में मंदिर निर्माण का साक्षी बनने की भी होड़ दिखी।

अब पंचकोसी परिक्रमा बुधवार रात 9:25 बजे से

14 कोसी परिक्रमा सकुशल समाप्त होने के बाद जिला प्रशासन ने राहत की सांस ली है। वहीं, अब पंचकोसी परिक्रमा की तैयारी शुरू कर दी गई है। पंच कोसी परिक्रमा का शुभ मुहूर्त 22 नवंबर की रात 9:25 बजे से है। परिक्रमा 23 नवंबर की शाम 7:21 बजे तक चलेगी। यह परिक्रमा रामनगरी की 15 किलोमीटर की परिधि में होती है। प्रशासन ने अब पंचकोसी परिक्रमा पथ को दुरुस्त करने का काम शुरू कर दिया है। पथ पर साफ-सफाई, प्रकाश व बैरीकेडिंग व्यवस्था को अंतिम रूप दिया जा रहा है। सड़कों पर बालू बिछाने और पानी छिड़काव का काम चल रहा है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली है क्रिप्टो करेंसी

संवाददाता

लखनऊ। मुंशीगंज स्थित राजर्षि रणंजय सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी में मंगलवार को ब्लॉक चेन प्रौद्योगिकी और क्रिप्टो करेंसी विषय पर सेमिनार आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता अजय दीप सिंह ने क्रिप्टो करेंसी के बारे में छात्रों को जानकारी देते हुए कहा कि क्रिप्टो करेंसी एक डिजिटल भुगतान प्रणाली है, जो लेनदेन को सत्यापित करने के लिए बैंकों पर निर्भर नहीं होती है। यह एक पीयर टू पियर प्रणाली है, जो किसी को भी कहीं भी भुगतान भेजने और प्राप्त करने में सक्षम बना सकती है। बताया कि क्रिप्टो करेंसी को डिजिटल वॉलेट में स्टोर किया जाता है। आज इसका प्रयोग बढ़ रहा है। कहा कि ब्लॉकचेन एक ऐसी प्रौद्योगिकी है, जिससे क्रिप्टो करेंसी यानी कि डिजिटल मुद्रा का संचालन होता है। यह एक डिजिटल सार्वजनिक बही खाता के रूप में काम करता है। जिसमें सभी लेनदेन दर्ज होते हैं। यहां तक की ब्लॉकचेन में एक बार किसी भी लेनदेन को दर्ज करने पर इसे ना तो वहां से हटाया जा सकता है और ना ही इसमें संशोधन किया जा सकता है। कंपनी विशेष कर इंजीनियरिंग और प्रबंधन के छात्रों को जागरूक करने का कार्य कर रही है। सेमिनार में इंजीनियरिंग और प्रबंधन के छात्र छात्राएं शामिल हुए। छात्रों ने सेमिनार के दौरान मुख्य वक्ता से कई सवाल भी पूछे। संस्थान निदेशक शशांक श्रीवास्तव ने नॉन लैब्स के मुख्य व्यवसाय विकास अधिकारी अजय दीप सिंह का आभार जताया।

प्रशांत अवस्थी बने श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन में लखनऊ मंडल अध्यक्ष

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ।श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन में लखनऊ के पत्रकार प्रशांत अवस्थी को मंडल अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

आपको बता दें कि श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन के नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष प्रशांत अवस्थी ने कहा कि हमारा संगठन पत्रकारों के हक की लड़ेगा लड़ाई। श्री बाला जी पत्रकार एसोसिएशन संगठन के सात जनपदों की कमान संभाल रहे पत्रकार प्रशांत अवस्थी ने खास बात चीत में बताया कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। पत्रकार समाज का दर्पण होते हैं, विपरीत परिस्थितियों में भी सच्चाई को सामने लाते हैं। ग्रामीण अंचल में पत्रकारिता बड़ी चुनौती है। पत्रकारिता प्राचीन समय से ही समाज को दिशा देती आ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ी छोटी सी खबर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करती है। पत्रकार मजलूमों की ताकत हैं, अपनी कलम के दम पर पीड़ितों को न्याय दिलाते हैं।अवस्थी ने कहा कि हम बिना भेदभाव के एक साथ संगठित होकर पत्रकार हित की लड़ाई लड़ेंगे।निश्चित तौर पर संगठन की अति आवश्यकता है। बिना भेदभाव के संगठित होकर कार्य करने की जरूरत है।वर्तमान की स्थितियां पत्रकार के लिए घातक साबित हो रहा है जिसे दूर करने के लिए संगठित होना पड़ेगा। जिले में तमाम पत्रकार संगठन काम कर रहे हैं हमें किसी से कोई बैर नहीं है हम सभी पत्रकार एक दूसरे का सहयोग करें और अपने हित की लड़ाई को लड़ें।

सेठ ए आर जयपुरिया के छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में किया जागरूक

संवाददाता

लखनऊ। पुलिस उपायुक्त यातायात हृदेश कुमार के निर्देशन में सेठ ए आर जयपुरिया, सुशांत गोल्फ सिटी, लखनऊ के लिए यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सड़क चिन्ह, रोड मार्किंग, ट्रैफिक लाइट, सड़क दुघर्टना के कारण, गुड समेरिटन, हेल्मेट, सीट बेल्ट आदि के बारे में प्रोजेक्टर के माध्यम से जानकारी दी गई, जिसमें मुख्य प्रशिक्षक के रुप में यातायात निरीक्षक राधे श्याम, ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क लखनऊ से पंकज शर्मा व सुमित मिश्रा, ट्रैफिक वार्डन अंशू दिक्षित और मारुति सुजुकी के रोड सेफ्टी कार्डिनेटर एहतेशाम ने जागरूक किया। कार्यक्रम में लगभग 350 से अधिक छात्र छात्रओं, प्रधानाचार्य व शिक्षको ने भाग लिया। सभी को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी पेम्प्लेट्स बांटे गए।

एकमुश्त समाधान योजना कैम्प में जमा हुए तीन लाख

संवाददाता

रहीमाबाद/लखनऊ। जालामऊ बिजली घर में अवर अभियंता अजीत कुमार की अध्यक्षता में एकमुश्त समाधान योजना के तहत ग्राम अहिंडर में कैम्प लगाया गया। कैम्प में पहुंचकर एकमुश्त समाधान योजना का लाभ पाने के लिए बकाया बिल जमा करने के लिए विद्युत उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन करवा। इसके साथ ही गलत बिलों का संसोधन कर सही किया गया। कैम्प के दौरान 50 से अधिक विद्युत उपभोक्ताओं ने एक मुफ्त समाधान योजना का लाभ लिया। जिसमें 37 बकायदार उपभोक्ताओं के रजिस्ट्रेशन हुए। अवर अभियंता अजीत कुमार ने कहा कि सरकार द्वारा बिजली बिल में ब्याज माफी योजना 31 दिसंबर के लिए तीन चरणों में शुरू की गई है जिसका पहला चरण 8 नवंबर से शुरू हो गया है जो 30 नवंबर तक चलेगा दूसरा चरण 1 दिसंबर से 15 दिसंबर और तीसरा चरण 16 दिसंबर से 31 दिसंबर तक जारी रहेगा। जिसमें बिजली बिल के बकाया उपभोक्ताओं को बिल जमा करने पर ब्याज माफी योजना का लाभ मिलेगा। मंगलवार को जालामऊ बिजली के घर के अंतर्गत ससपन फीडर के ग्राम अहिंडर में लगे कैंप में बड़ी संख्या में विद्युत उपभोक्ता पहुंचे। इस दौरान तीन दर्जन से अधिक उपभोक्ताओं ने लाभ पाने के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। कैम्प में करीब 3 लाख रुपए जमा हुए और अवर अभियंता अजीत कुमार ने विद्युत बकायेदार उपभोक्ताओं से अपील करते हुए कहा कि सरकार द्वारा जारी की गई एकमुश्त समाधान योजना का लाभ उठाकर भविष्य में हो सकने वाली किसी भी कार्रवाई से बचे और इस योजना का भरपूर प्रचार प्रसार करें ताकि बिजली बिल के बकायेदार उपभोक्ताओ को इस योजना का लाभ मिल सके। इस मौके पर विधुतकर्मी मनीष यादव, सौरभ वर्मा, दुर्गेश त्रिपाठी, रामदीन, सुनील रावत, पंकज कुमार आदि उपस्थित रहें।

प्रकाश बाल विद्या मंदिर इंटर कालेज के छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में किया जागरूक

संवाददाता

लखनऊ। पुलिस उपायुक्त यातायात हृदेश कुमार के निर्देशन में प्रकाश बाल विद्या मंदिर इंटर कालेज, विशाल खंड गोमतीनगर, लखनऊ में छात्र-छात्राओं के लिए यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें यातायात निरीक्षक बिपिन पांडेय सर ने बड़े ही व्यवहारिक ढंग से यातायात के सड़क चिन्ह, ट्रैफिक लाइट, रोड मार्किंग, चौराहे की जानकारी दी तथा कार्यक्रम में मारुति सुजुकी के रोड सेफ्टी कार्डिनेटर एहतेशाम ने डेमो दिखाकर सड़क पर पैदल चलने व सायकिल चलाने के सुरक्षित तरीके बताए। कार्यक्रम का आयोजन नफीस अहमद -पूर्व वार्डन सिविल डिफेंस, आशीष कुमार, सज्जन अली, शाजिया, ऐश्वर्य शर्मा, सद्दाम, स्कूल प्रबंधक - आर डी मौर्य, स्कूल प्रधानाचार्य- श्रीमती त्रप्ति सिंह के सहयोग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य, शिक्षक व लगभग 100 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सभी को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी पेम्प्लेट्स बांटे गए।

प्रकाश बाल विद्या मंदिर इंटर कालेज के छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में किया जागरूक

लखनऊ। पुलिस उपायुक्त यातायात हृदेश कुमार के निर्देशन में प्रकाश बाल विद्या मंदिर इंटर कालेज, विशाल खंड गोमतीनगर, लखनऊ में छात्र-छात्राओं के लिए यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें यातायात निरीक्षक बिपिन पांडेय ने बड़े ही व्यवहारिक ढंग से यातायात के सड़क चिन्ह, ट्रैफिक लाइट, रोड मार्किंग, चौराहे की जानकारी दी तथा कार्यक्रम में दुर्घटना के कारण व उनसे बचाव के उपाय व गुड समेरिटन नियम की जानकारी दी। कार्यक्रम में मारुति सुजुकी के रोड सेफ्टी कार्डिनेटर एहतेशाम ने हेल्मेट के सही उपयोग की जानकारी देकर सभी दो पहिए वाहन चालकों से हेल्मेट का प्रयोग करने का आग्रह किया तथा सम्बन्धित विडियो भी दिखायें। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य, शिक्षक व लगभग 200 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सभी को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी पेम्प्लेट्स बांटे गए।

वर्ल्ड कप में हार बाजार मायूस

रेस्टोरेंट वालों को झटका, मिठाई कारोबारियों को 100-100 किलो के लड्डू का नुकसान

संवाददाता

लखनऊ। विश्वकप 2023 में भारत की हार से बाजार मायूस हुआ है। दुकानदारों ने जश्न की पूरी तैयारी कर ली थी पर हार से लोगों ने अपने कार्यक्रम रद्द कर दिए। नतीजा होटल-रेस्टोरेंट वालों से लेकर मिठाई कारोबारियों को तगड़ा नुकसान हुआ। विश्व कप फाइनल मैच में भारत की जीत की उम्मीद लिए राजधानी में जिस तरह की तैयारी थी, उससे बच्चा-बच्चा वाकिफ है। बाजार ने तगड़े इंतजाम किए थे, लेकिन टीम इंडिया की हार से इसे तगड़ा झटका लगा। प्रशंसकों की निराशा का असर बाजार पर भी पड़ा। मल्टीप्लेक्स में शो को रोक कर क्रिकेट दिखाने के इंतजाम किए गए थे। धरे रह गए। नौ मल्टीप्लेक्स में क्रिकेट लाइव के इंतजाम थे। कहीं-कहीं तो लोगों ने पूरी ऑडी बुक कर रखी थी। कहीं टिकट 400 रुपये तो कहीं 1500 रुपये भी लिए गए। उत्तर प्रदेश सिनेमा एक्जीबिटर्स फेडरेशन के अध्यक्ष आशीष अग्रवाल का कहना है कि एक दिन की कमाई पर 30 फीसदी असर पड़ा है। 70 फीसदी सीटें क्रिकेट मैच के लिए बुक थीं।

रेस्टोरेंट, क्लब में बुकिंग धरी रह गई

शहर के कई क्लबों में स्क्रीन लगाई गई थी। संचालकों को उम्मीद थी कि दिन भर स्नैक्स-ड्रिंक के बाद रात को डिनर उन्हें रोज से दोगुना बिजनेस देकर जाएगा। ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि शाम को जैसे ही भारत की हार होती दिखी, लोगों ने डिनर लगभग कैंसिल ही कर दिया। आमतौर पर होटल-रेस्टोरेंट को कमाई मेनकोर्स के बिल से होती है।

100-100 किलो के लड्डू की तैयारी का नुकसान अलग

मिठाई कारोबारियों का कहना है कि कुछ प्रतिष्ठित ब्रांड ने 100-100 किलो के लड्डू बनाने की तैयारी कर रखी थी। बूंदी तैयार थी, बस जीत के आसार बनते ही उसे आकार देना था। न भारत जीता न लड्डू बना।

सम्पादकीय

नफरत की ही सियासत क्यों?

एक पुरानी फिल्म का गाना था ÷सावन जो आग लगाए उसे कौन बुझाए÷ कुछ उसी तरह का रवैया वजीर-ए-आजम नरेन्द्र मोदी ने भी अख्तियार कर रखा हैं वह दस साल से देश की सत्ता में हैं इसके बावजूद मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ की चुनावी रैलियों में वह अपनी सरकार के जरिए किए गए अवामी कामों का जिक्र करने के बजाए नफरत के सहारे ही एलक्शन जीतने की कोशिशें करते दिख रहे हैं। दुनिया का एक भी हुक्मरां ऐसा नहीं होगा जो अपने मुल्क में गड़े मुर्दे उखाड़ कर नफरत का माहौल पैदा करता हो। हर हुक्मरा की कोशिश होती है कि उसके मुल्क के लोग पुरानी बातें भूलकर अम्नो अमान (शांति) के साथ जिन्दगी बसर करें। और देश की तरक्की के लिए अपना मुकम्मल तआवुन (योगदान) दें। लेकिन आबादी के लिहाज से दुनिया के सबसे बड़े मुल्क भारत का वजीर-ए-आजम होकर भी नरेन्द्र मोदी हर इंतखाबी मुहिम में गड़े मुर्दे उखाड़ कर लोगों में नफरत फैलाने का काम करते दिखते हैं। नफरत की सियासत में उन्हें इसी साल हुए दिल्ली एमसीडी, हिमाचल और कर्नाटक असम्बली के चुनाव में जबरदस्त शिकस्त का भी सामना हुआ है। लेकिन वह अपना रवैया तब्दील करने के लिए तैयार नहीं है। भारतीय जनता पार्टी भी डबल इंजन सरकार कहे जाने वाले मणिपुर में बीजेपी ने नफरत का जो खेल खेला उससे परी दुनिया में देश की बदनामी तो हुई ही खुद पीएम मोदी का यह हाल हो गया कि मणिपुर से मिली रियासत मिजोरम का असम्बली एलक्शन सात नवम्बर को मुकम्मल हो गया, लेकिन मोदी मिजोरम जाने की हिम्मत नहीं कर सके। वह असम के अलावा बाकी पूरे नार्थ-ईस्ट से कट चुके है। देश के लिए यह बहुत ही खतरनाक सूरतेहाल है, क्योंकि यह रियासतें सरहदी रियासतें हैं।

नौ नवम्बर को वजीर-ए-आजम मोदी राजस्थान के उदयपुर में चुनावी रैली करने गए तो तकरीबन डेढ़ साल पहले उदयपुर में कन्हैयालाल टेलर के कत्ल का मामला फिर उठाया। इससे पहले चार बार वह राजस्थान के दूसरे मकामात पर वह मामला उठा चुके हैं। कन्हैया के कत्ल का मामला उठाते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान हुकूमत दहशतगर्दी के साथ खड़ी रहती है, उन्हीं दहशतगर्दो ने कन्हैया की गर्दन काटकर उनका कत्ल किया और सरकार कातिलों की हमदर्दी में खड़ी दिखी। मोदी इस मामले में पूरी तरह गलत बयानी कर रहे थे या यूं कहे कि झूट बोल रहे थे। कन्हैया के दोनो कातिल मोहम्मद गौस और रियाज अटारी भारतीय जनता पार्टी को सरगर्म वर्करी और मकामी ओहदेदार थे दंगा भड़काने की कोशिश के इल्जाम में दोनों को कन्हैया के कत्ल से दो रोज पहले उदयपुर पुलिस ने पकड़ा था तो बीजेपी लीडरान ने थाने पहुंचकर उन्हें जबरदस्ती छुड़ा लिया था। कांग्रेस लीडर जयराम रमेश ने मोदी के इल्जाम के बाद मीडिया से बात करते हुए बीजेपी लीडरान के साथ उन दोनों की तस्वीरें भी दिखाई। वजीर-ए-न्आला अशोक गहलौत ने कहा कि न्हैया के कत्ल के आठ घंटे के अंदर राजस्थान पुलिस ने दोनों कातिलों को गिरफ्तार कर लिया था लेकिन अगले ही दिन मोदी की नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने आकर केस अपने हाथ में ले लिया था। अब तो मोदी और होम मिनिस्टर अमित शाह को बताना चाहिए कि एनआईए ने यह मामला अपने हाथ में लेने के बाद क्या कार्रवाई की। लेकिन मोदी उल्टे राजस्थान सरकार पर ही हमले कर रहे है और नफरत फैला रहे है।

पी.एम. मोदी को जिस कन्हैया से अचानक इतनी मोहब्बत हो गई है उन्हें यह क्यों नहीं याद रहता कि कन्हैया के वाक्ए के बाद राजस्थान के ही जुनैद और नासिर को बजरंग दल के मोनू मनेसर गरोह को गुण्डे अगवा करके हरियाणा ले गए थे, गायों की स्मगलिंग का इल्जाम लगाकर उन्हें बुरी तरह मारा-पीटा फिर उनकी बोलेरो गाड़ी में डालकर जिंदा जला दिया, क्या कन्हैया लाल की तरह जुनैद और नासिर इंसान नहीं थे। किसी भी वजीर-ए-आजम को तो इंसानियत और इंसानों की हिफाजत की बात करनी चाहिए, लेकिन मोदी बार-बार कन्हैया के कत्ल का जिक्र करके शायद देश को यह बताना चाहते हैं कि वह हिन्दू हैं उनकी नजर में हिन्दू ही इंसान है वह पूरे देश के वजीर-ए-आजम न होकर कट्टरपंथी हिन्दू ग्रुप के ही वजीर-ए-आजम है। किसी भी इंसान का कत्ल पूरी इंसानियत के कत्ल के बराबर माना जाता है, फिर मोदी कन्हैया लाल, जुनैद और नासिर को कत्ल मामलात में एकतरफा बात क्यों कर रहे हैं। जान की जितनी अहमियत कन्हैया की थी उतनी ही अहमियत जुनैद और नासिर की भी थी। तीनों को कत्ल किए जाने का तरीका भी इंतहाई खौफनाक और काबिले मजम्मत है। इसके बावजूद गहलौत सरकार ने कन्हैया के घर वालों को पचास लाख की माली मदद दी, उनके घर के दो लोगों को सरकारी नौकरी दी, उनके घर वालों को पुरसा देने खुद गहलौत उनके घर गए। उसी गहलौत सरकार ने जुनैद और नासिर के घर वालों को सिर्फ पांच-पांच लाख की मदद दी। वजीर-ए-आजम होने के नाते मोदी को गहलौत सरकार की इस कार्रवाई पर हमला करना चाहिए था कि उन्होंने करने वाले तीनों लोगों के घर वालों की माली मदद में इतना बड़ा फर्क क्यों किया?

यूट्यूब चैनल चलाने वाले सीनियर सहाफी रवीश कुमार बार-बार कहते हैं कि मुल्क के वजीर-ए-आजम की सतह से गुजिश्ता दस सालों में जितना झूट बोला गया बल्कि सिर्फ झूट ही बोला गया इतना झूट कभी किसी मुल्क के वजीर-ए-आजम की सतह से नहीं बोला गया, लेकिन पी.एम. मोदी हैं कि किसी भी तरह मानते ही नहीं, अब उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया है कि कांग्रेस पार्टी को तो अर्बन नक्सल चला रहे हैं। उनकी नजर मतें देश और दुनिया का जो शख्स राइटिस्ट नहीं है वह नक्सली है। हम बुजुर्गो से सुनते आए हैं कि जिस घर में या जिस कारोबारी ठिकाने पर बैठ कर लोग झूट बोलते है उन घर और कारोबार की बरकत खत्म हो जाती है और वहां तबाही आ जाती है। अब अगर किसी देश का वजीर-ए-आजम या सदर ही रोज झूट बोले तो देश का क्या हश्र होगा इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। इस साल दीवाली जैसे अहम त्योहार के मौके पर फौजियों को खिताब करते हुए वजीर-ए-आजम मोदी ने एक नया इंकशाफ (रहस्योघाटन) करते हुए कहा कि जब वह प्राइम मिनिस्टर नहीं थे, गुजरात के चीफ मिनिस्टर भी नहीं थे तब भी पिछले पैंतीस सालों से अपने फौजी भाइयों के साथ दीवाली मनाने के लिए वह किसी न किसी बार्डर पर जाते रहे है, वहीं मेस में खाना खा लेते थे और वहीं सो जाते थे। उनका यह बयान किसी भी कीमत पर सच नहीं हो सकता, क्योंकि बार्डर पर तैनात फौजियों के कैम्पों में इतनी सख्त सिक्योरिटी रहती है कि बाहर का कोई शख्स कैम्पों में दाखिल ही नहीं हो सकता, फिर मेस में खाना खाकर वहां सोने का तो कोई सवाल ही नहीं हो सकता। लेकिन मोदी है तो कुछ भी मुमकिन है। पैंतीस सालों का भी उनके साथ अजीब किस्सा जुड़ा हुआ है। वह अक्सर कहते रहते है कि उन्होंने जिन्दगी में पैंतीस साल भीक मांग कर खाया है अब कह रहे है कि पैंतीस साल से बार्डर पर जाते रहे हैं। मोदी है कि इस किस्म की बातें करते रहते हैं और हम भारत के एक सौ तैतालिस (143) करोड़ लोग या तो बहुत भोले है या बेवकूफ कि उनकी बात पर भरोसा करते रहते हैं।

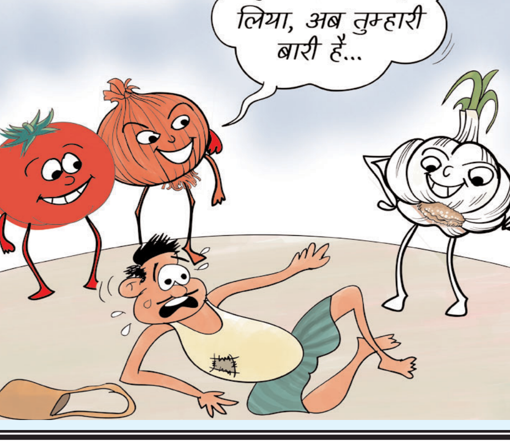

राजनीतिक एजेंडे में शामिल हो पर्यावरण का मामला

खतरनाक स्तर पर वायु प्रदूषण

एक बड़ी सच्चाई यह भी है कि अगर हमनें वायु प्रदूषण को कम करने के तत्काल कदम नहीं उठाए तो भविष्य में इसकी बड़ी कीमत हम सबको चुकानी पड़ेगी। कुल मिलाकर कथित विकास के पीछे विनाश की आहट धीरे-धीरे दिखाई और सुनाई पड़ने लगी है।

पिछले कुछ समय से राजधानी दिल्ली सहित देश के कई बड़े शहरों में वायु प्रदूषण जानलेवा स्तर तक पहुंच गया है। पिछले दिनों जब पूरी दिल्ली धुएं और धुंध की चपेट में थी, उस दौरान हर आम और खास को सांस लेने में परेशानी, आंखों में जलन सहित कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं होने लगी थी। अभी भी दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक लगातार गंभीर श्रेणी में बना हुआ है, और लगभग यही हाल देश के सभी शहरों का है। दिवाली के बाद दिल्ली-एनसीआर का वातावरण जहरीला बना हुआ है।

वायु प्रदूषण चिंता का विषय

एक बड़ी सच्चाई यह भी है कि अगर हमनें वायु प्रदूषण को कम करने के तत्काल कदम नहीं उठाए तो भविष्य में इसकी बड़ी कीमत हम सबको चुकानी पड़ेगी। कुल मिलाकर कथित विकास के पीछे विनाश की आहट धीरे-धीरे दिखाई और सुनाई पड़ने लगी है। हालात इतने बदतर हो गए हैं कई बार वायु प्रदूषण मापने वाला इंडेक्स ही नहीं काम करता है। मतलब वह उच्चतम स्तर तक पहुंच जाता है। सच्चाई यह है कि अधिकांश राजनीतिक दलों के एजेंडे में पर्यावरण संबंधी मुद्दा है ही नहीं, ना ही उनके चुनावी घोषणापत्र में पर्यावरण, प्रदूषण कोई मुद्दा रहता है। देश में हर जगह, हर तरफ, हर पार्टी विकास की बातें करती है लेकिन ऐसे विकास का क्या फायदा जो लगातार विनाश को आमंत्रित करता है। ऐसे विकास को क्या कहें जिसकी वजह से सम्पूर्ण मानवता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया हो। सच्चाई तो यह है कि अब समय आ गया है जब पर्यावरण का मुद्दा राजनीतिक पार्टियों के साथ आम आदमी की प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए। क्योंकि अब भी अगर हमनें इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया, तो आगे आने वाला समय भयावह होगा। फिलहाल देश के सभी बड़े शहरों में वायु प्रदूषण अपने निर्धारित मानकों से बहुत ज्यादा है।

कैंसर का एक कारण प्रदूषण मानते हैं डॉक्टर

दिल्ली में पिछले 18 सालों में कैंसर से होने वाली मौतें साढ़े तीन गुना तक बढ़ गई हैं और डॉक्टर इसका एक कारण प्रदूषण भी मानते हैं। इस बीच राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के साल 2012 से साल 2016 तक के आंकड़ों के अनुसार, भारत में कैंसर रजिस्ट्री वाले सभी स्थानों में राजधानी दिल्ली में सबसे ज्यादा लोगों की रजिस्ट्री हुई है। इस आंकड़े के अनुसार 0 से 14 साल के उम्र के बच्चों में कैंसर का प्रतिशत 0.7 प्रतिशत से 3.7 प्रतिशत के बीच है। इस रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण बच्चों में कैंसर होने का खतरा ज्यादा हो जाता है क्योंकि बच्चे वयस्कों की तुलना में ज्यादा तेजी से सांस लेते हैं और ज्यादा फिजिकल एक्टिविटी करते हैं।

इसके अलावा बच्चे ज्यादातर जमीन के करीब रहते हैं, जहां प्रदूषक जमा होता रहता हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में जिस तरीके से वातावरण में प्रदूषण फैला हुआ है। वह बड़ों से लेकर बच्चों तक के लिए काफी हानिकारक है। दिल्ली के ज्यादातर अस्पतालों में प्रदूषण के कारण बीमार हो रहे लोग भर्ती किए जा रहे हैं। फिलहाल इस जहरीली हवा में कई प्रदूषक मौजूद हैं, जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड (सीओ), नाइट्रिक ऑक्साइड (एनओ), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2), ओजोन (ओटीएच), आदि। यह सभी तत्व इंसानी शरीर के लिए खतरनाक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली का वातावरण बेहद जहरीला हो गया है। यदि वायु प्रदूषण रोकने के लिए शीघ्र कदम नहीं उठाए गए तो इसके गंभीर परिणाम सामने आएंगे। कुछ वर्षो पहले तक बीजिंग की गिनती दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर के रूप में होती थी, लेकिन चीन की सरकार ने इस समस्या को दूर करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट %वायु प्रदूषण और बाल स्वास्थ्य प्रिस्क्राइबिंग क्लीन एयर% के अनुसार भारत में पिछले पांच साल में जहरीली हवा के कारण सबसे ज्यादा, 5 साल से कम उम्र के बच्चों की असामयिक मौत हुई हैं। इसी रिपोर्ट के अनुसार सिर्फ बाहरी वायु प्रदूषण के कारण हर घंटे लगभग सात बच्चे मर जाते हैं, और उनमें से आधे से अधिक लड़कियां होती हैं। ग्रीनपीस इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण की स्थिति भयावह है। कुल 168 भारतीय शहरों में से एक भी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के मानकों के अनुरूप नहीं है। इस संगठन ने आरटीआई समेत कई स्रोतों के हवाले से बताया है कि भारत में हर साल वायु प्रदूषण के चलते 12 लाख लोगों की जान चली जाती है। यह तादाद तंबाकू के सेवन से हर साल काल का ग्रास बनने वालों के अनुपात से बस थोड़ी सी ही कम है। इतना ही नहीं, देश का तीन प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) जहरीली हवा के धुएं में घुल जाता है। अगर देश का विकास जरूरी है तो सबसे पहले वायु प्रदूषण से लड़ना होगा। एक अध्ययन के मुताबिक वायु प्रदूषण भारत में मौत का पांचवां बड़ा कारण है। हवा में मौजूद पीएम25 और पीएम10 जैसे छोटे कण मनुष्य के फेफड़े में पहुंच जाते हैं, जिससे सांस व हृदय संबंधित बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है। इससे फेफड़ा का कैंसर भी हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का नया अध्ययन यह बताता है कि हम वायु प्रदूषण की समस्या को दूर करने को लेकर कितने लापरवाह हैं और यह समस्या कितनी विकट होती जा रही है। खास बात यह है कि ये समस्या सिर्फ दिल्ली में ही नहीं है बल्कि देश के लगभग सभी शहरों की हो गई है। अगर हालात नहीं सुधरे तो वो दिन दूर नहीं जब शहर रहने के लायक नहीं रहेंगे। जो लोग विकास, तरक्की और रोजगार की वजह से गांव से शहरों की तरफ आ गए हैं उन्हें फिर से गांवों की तरफ रुख करना पड़ेगा। स्वच्छ वायु सभी मनुष्यों, जीवों एवं वनस्पतियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके महत्त्व का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि मनुष्य भोजन के बिना हफ्तों तक जल के बिना कुछ दिनों तक ही जीवित रह सकता है, किन्तु वायु के बिना उसका जीवित रहना असम्भव है। मनुष्य दिन भर में जो कुछ लेता है उसका 80 प्रतिशत भाग वायु है। प्रतिदिन मनुष्य 22000 बार सांस लेता है। इस प्रकार प्रत्येक दिन में वह 16 किलोग्राम या 35 गैलन वायु ग्रहण करता है। वायु विभिन्न गैसों का मिश्रण है जिसमें नाइट्रोजन की मात्रा सर्वाधिक 78 प्रतिशत होती है जबकि 21 प्रतिशत ऑक्सीजन तथा 0.03 प्रतिशत कार्बन डाइ ऑक्साइड पाया जाता है तथा शेष 0.97 प्रतिशत में हाइड्रोजन, हीलियम, आर्गन, निऑन, क्रिप्टन, जेनान, ओजोन तथा जल वाष्प होती है। वायु में विभिन्न गैसों की उपरोक्त मात्रा उसे संतुलित बनाए रखती है। इसमें जरा सा भी अन्तर आने पर वह असंतुलित हो जाती है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित होती है। श्वसन के लिए ऑक्सीजन जरूरी है। जब कभी वायु में कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन के ऑक्साइडों की वृद्धि हो जाती है, तो यह खतरनाक हो जाती है। सिर्फ दिल्ली ही नहीं बल्कि देश के कई शहरों का वातावरण बेहद प्रदूषित हो गया है। इसे रोकने के लिए सरकार को अब जवाबदेही के साथ एक निश्चित समय सीमा के भीतर ठोस प्रयास करना पड़ेगा नहीं तो प्राकृतिक आपदाओं के लिए हमें तैयार रहना होगा। जिस तरह से आज राजधानी दिल्ली के लोग शुद्ध हवा में सांस लेने को तरस रहें हैं। ऐसे में वो दिन दूर नहीं जब देश के अधिकांश शहरों का यही हाल होगा इसलिए हमें कल से नहीं बल्कि आज से या कहे अभी से इस रोकने के लिए तत्काल कदम उठाना होगा। सरकार के साथ साथ समाज और व्यक्तिगत स्तर पर भी काम करना होगा तभी इन सब से छुटकारा मिल पाएगा।

थोक और खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी राहत

खाद्यान्न संकट से इन दिनों जहां वैश्विक महंगाई बढ़ी हुई है, वहीं अपने यहां थोक और खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी राहत है।

निश्चित रूप से दीपावली से जिस तरह देश के कोने-कोने में लगातार मांग में वृद्धि से बाजार में रौनक है, उसके आगे भी बने रहने की अनुकूलताएं दिखाई दे रही हैं। हाल ही में कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने कहा कि देश भर में त्योहारों के दौरान खुदरा और स्थानीय बाजारों में अच्छी रौनक रही और 3.75 लाख करोड़ रुपये का रिकॉर्ड कारोबार हुआ है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकनॉमी (सीएमआईआई) की ताजा रिपोर्ट में सामने आया है कि अधिकांश कच्चे माल की लागत घट गई है। देश में रोजमर्रा के उपयोग के सामान (एफएमसीजी) की मांग में भी वृद्धि हो रही है। कच्चे माल की लागत कम होने से स्थानीय ब्रांडों के लिए कम कीमतों में एफएमसीजी उत्पाद तैयार कर बेचना आसान हो गया है। बीते अक्तूबर में ई-वे बिल का आंकड़ा 10.3 करोड़ के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। कोई भी सामान राज्य के भीतर और बाहर भेजने के लिए कारोबारी ऑनलाइन ई-वे बिल निकालते हैं। इनकी संख्या में वृद्धि अर्थव्यवस्था में मांग और आपूर्ति बढ़ने के रुझान का प्रारंभिक संकेत हैं। गौरतलब है कि बाजारों में तेज सुधार से चालू वित्त वर्ष में सरकार की कुल कर प्राप्तियां बजट अनुमान से काफी अधिक रहने की संभावना है। उम्मीद है कि प्रत्यक्ष कर और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह में त्योहारी सीजन में आई तेजी आगामी महीनों में भी बनी रहेगी। वस्तुतः इस समय देश में बढ़ती मांग के तीन प्रमुख आधार हैं। महंगाई में नर्मी, बेरोजगारी के आंकड़े में गिरावट और सरकारी योजनाओं से लोगों के पास अधिक धन का प्रवाह। इन कारणों से लोग अधिक खर्च करने के लिए प्रेरित हुए हैं। निस्संदेह थोक एवं खुदरा महंगाई के सूचकांक राहत का परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। जहां इन दिनों वैश्विक खाद्यान्न संकट से वैश्विक महंगाई बढ़ी हुई है और दुनिया के बाजार पस्त दिखाई दे रहे हैं, वहीं इन प्रतिकूलताओं के बावजूद भारत के बाजारों में रौनक है। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित महंगाई बीते अक्तूबर में शून्य से 0.52 फीसदी नीचे रही। इस साल अप्रैल से यह लगातार सातवां महीना है, जब थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई शून्य से नीचे बनी हुई है। इसका शून्य से नीचे रहने का अर्थ कुल थोक कीमतों में सालाना आधार पर गिरावट है। इसी तरह उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा मुद्रास्फीति बीते अक्तूबर में घटकर 4.87 फीसदी पर आ गई। देश में ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में रोजगार बढ़ने से बाजार में सुधार को गति मिली है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, इस वर्ष ग्रामीण व शहरी, दोनों ही जगहों पर बेरोजगारी दर में कमी आई है और रोजगार की अच्छी स्थिति दिख रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के अनुसार, देश में पिछले छह वर्षों में बेरोजगारी दर छह फीसदी से घटकर 3.2 फीसदी पर आ गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर घटाने में मनरेगा की अहम भूमिका है, तो शहरों में बेरोजगारी दर घटाने में कौशल विकास, डिजिटल स्किल्स तथा गिग अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका रही है। वैश्विक एजेंसियां भी भारत के बाजारों के बढ़ने के अनुमान जता रही हैं। रेटिंग एजेंसी मूडीज की ग्लोबल मैक्रो आउटलुक, 2024 की रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश, पाकिस्तान और श्रीलंका की तुलना में भारत में कम प्रतिबंधात्मक व्यापार नीतियां, बेहतर बुनियादी ढांचे और मजबूत घरेलू मांग से भारत के बाजार और उद्योग आगे बढ़ रहे हैं, और भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में, वर्ष 2023-24 और 2024-25 के लिए देश की विकास दर क्रमशः 6.7 और 6.1 फीसदी रहने की संभावना है। आगामी समय में देश के बाजारों में तेजी बनाए रखने के लिए हमें खाद्यान्नों की महंगाई पर नियंत्रण रखना होगा। चूंकि खरीफ फसल के कमजोर रहने और रबी की बुआई प्रभावित होने से आगे महंगाई बढ़ने का जोखिम है। ऐसे में, स्थिर रुपये, प्रबंधन योग्य ऊर्जा लागत और ईंधन की कीमतों पर कर नीति से महंगाई को स्थिर सीमा में रखने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, अतिरिक्त नकदी की निकासी पर भी रिजर्व बैंक को ध्यान देना होगा। साथ ही, व्यापार की सरलता और रोजगार के अवसरों की बढ़ोतरी पर ध्यान देना होगा।

खत्म नहीं हुई है गहलोत और वसुंधरा की राजनीति

देखा जाये तो राजस्थान की राजनीति के दिग्गज खिलाड़ी अशोक गहलोत को राजनीति का जादूगर माना जाता है तो दूसरी ओर वसुंधरा राजे के बारे में कहा जाता है कि भाजपा में आखिरकार वही होता है जो महारानी चाहती हैं। राजस्थान विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी इस बात के लिए पूरी मेहनत कर रही है कि राज्य में हर पांच साल में सरकार बदलने का रिवाज इस बार टूट जाये। वहीं भाजपा का प्रयास है कि हर पांच साल में सरकार बदलने के रिवाज का उसे लाभ हो लेकिन सीटों की संख्या इतनी ज्यादा मिले जिससे यह प्रकट हो सके कि अशोक गहलोत सरकार से जनता कितनी नाराज थी। राजस्थान में रिवाज बदलेगा या राज यह तो तीन दिसंबर को पता चलेगा। लेकिन एक बात तो है कि राजस्थान का चुनावी रण इस बार हाल के कई चुनावों से बदला-बदला नजर आ रहा है। राजस्थान में अरसे बाद ऐसा हुआ है जब भाजपा और कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री कौन बनेगा, यह चुनाव से पहले तय नहीं है। लेकिन अशोक गहलोत और वसुंधरा राजे यह मान कर बैठे हैं कि मुख्यमंत्री पद घूम फिरकर उनके पास आना ही है। कांग्रेस की ही बात करें तो अशोक गहलोत स्पष्ट कर चुके हैं कि वह तो मुख्यमंत्री पद छोड़ना चाहते हैं लेकिन यह पद उन्हें नहीं छोड़ता। यानि मतलब साफ है कि गहलोत मुख्यमंत्री पद की दौड़ में बने हुए हैं। वहीं सचिन पायलट कह रहे हैं कि उनके सारे मुद्दे कांग्रेस आलाकमान ने सुलझा दिये हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि उन्हें यह आश्वासन मिल गया है कि यदि कांग्रेस की सरकार दोबारा बनती है तो मुख्यमंत्री पद उन्हें ही मिलेगा। टिकट वितरण के दौरान भी जिस तरह गहलोत समर्थकों की बजाय सचिन खेमे के लोगों को तरजीह दी गयी उससे भी भविष्य के संकेत मिल गये थे लेकिन गहलोत फिलहाल सबकुछ चुपचाप देख रहे हैं क्योंकि वह जानते हैं कि उन्हें कब कौन-सा कदम उठाना है।

दूसरी ओर भाजपा की बात करें तो 2003 के बाद यह राजस्थान का पहला विधानसभा चुनाव है जिसमें भाजपा का नेतृत्व वसुंधरा राजे नहीं कर रही हैं। वसुंधरा राजे का नाम भाजपा उम्मीदवारों की पहली सूची में नहीं आना, परिवर्तन यात्राओं का नेतृत्व उन्हें नहीं दिया जाना, वसुंधरा समर्थक नेताओं कैलाश मेघवाल

और युनूस खान जैसे वरिष्ठ नेताओं के टिकट काटना तथा वसुंधरा समर्थक कुछ विधायकों की सीटों में परिवर्तन कर भाजपा नेतृत्व ने संकेत दे दिया था कि मुख्यमंत्री की कुर्सी वसुंधरा राजे से दूर हो गयी है। यही नहीं, भाजपा की पहली सूची आने के बाद जिस तरह वसुंधरा राजे को खुद का टिकट हासिल करने के लिए मशक्कत करनी पड़ी और एक जनसभा में अपनी रिटायरमेंट की बात तक कहनी पड़ी, वह दर्शाता है कि अपने राजनीतिक भविष्य का वसुंधरा राजे को अहसास हो चुका है लेकिन वह हार मानने के लिए कतई तैयार नहीं हैं। देखा जाये तो राजस्थान की राजनीति के दिग्गज खिलाड़ी अशोक गहलोत को राजनीति का जादूगर माना जाता है तो दूसरी ओर वसुंधरा राजे के बारे में कहा जाता है कि भाजपा में आखिरकार वही होता है जो महारानी चाहती हैं। अशोक गहलोत और वसुंधरा राजे राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी भले हों लेकिन दोनों को अच्छा मित्र भी माना जाता है। चुनाव के दौरान दोनों भले एक दूसरे पर निशाना साधें और भ्रष्टाचार के तमाम आरोप लगायें लेकिन अपने मुख्यमंत्रित्वकाल के दौरान दोनों एक दूसरे के खिलाफ कोई जांच नहीं कराते। यही नहीं, जब वसुंधरा विपक्ष में हों तब वह सुनिश्चित करती हैं कि उनकी पार्टी की वजह से गहलोत की मुख्यमंत्री की कुर्सी पर कोई संकट नहीं आये। यही काम गहलोत विपक्ष में रहने के दौरान करते हैं। पिछले दिनों अशोक गहलोत ने खुद बताया था कि जब सचिन पायलट ने बगावत की थी तो वसुंधरा राजे ने भाजपा की ओर से उनकी सरकार गिराने की कोशिशों का विरोध किया था।

अशोक गहलोत और वसुंधरा राजे की राजनीतिक शख्सियत की बात करें तो दोनों नेताओं के आगे उनकी पार्टी का आलाकमान अब तक नतमस्तक होता रहा है। अशोक गहलोत का प्रभाव तब देखने को मिला था जब उन्होंने सचिन पायलट का साथ दे रहे कांग्रेस आलाकमान के समक्ष अपनी ताकत का खुलकर इजहार किया था। कांग्रेस के तत्कालीन केंद्रीय पर्यवेक्षक मल्लिकार्जुन खरगे और अजय माकन मुख्यमंत्री निवास पर पार्टी विधायक दल की बैठक होने का इंतजार करते रह गये और बैठक कहीं और हो गयी थी। यही नहीं अशोक गहलोत ने कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने की बजाय राजस्थान का मुख्यमंत्री बने रहने को तवज्जो देकर गांधी परिवार को सकते में डाल दिया था। वहीं राजस्थान भाजपा में भी 2003 से वही होता रहा है जो वसुंधरा राजे चाहती रही हैं। वसुंधरा राजे के खिलाफ पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत और पूर्व केंद्रीय मंत्री जसवंत सिंह जैसे दिग्गजों ने भी अभियान चलाया था लेकिन उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाये थे। किरोड़ी लाल मीणा और घनश्याम तिवाड़ी जैसे नेता वसुंधरा विरोध में भाजपा छोड़ गये लेकिन फिर वापस पार्टी में लौटना ही पड़ा। देखा जाये तो चाहे नेता प्रतिपक्ष का पद हो, मुख्यमंत्री पद हो, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पद हो... भाजपा को आखिरकार वसुंधरा राजे की ही बात माननी पड़ती थी लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। बहरहाल, चाहे गहलोत हों या वसुंधरा, दोनों ही नेताओं की राजनीति को अभी खत्म नहीं समझा जा सकता। दोनों ही राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी हैं। दोनों ही नेता चुनावों की वजह से अभी ज्यादा बोल नहीं रहे हैं और आक्रामक तेवर नहीं दिखा रहे हैं लेकिन दोनों ही नेता जानते हैं कि अपनी अपनी पार्टी को जीत मिलने की स्थिति में मुख्यमंत्री पद तक कैसे पहुँचना है। दोनों ही नेता इसके लिए जमीनी स्तर पर काम भी कर रहे हैं। हम आपको बता दें कि राजस्थान विधानसभा चुनावों में भाजपा और कांग्रेस एक दूसरे की मुश्किल उतनी नहीं बढ़ा रहे हैं जितनी मुश्किल इन दोनों ही पार्टियों के बागी नेता, अधिकृत उम्मीदवारों की बढ़ा रहे हैं।

कलश यात्रा के साथ शुरू हुआ 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ

संवाददाता

मितौली खीरी। विकास खंड मितौली के सामने आदर्स इंटर कालेज के सामने मेला मैदान में 24 कुंडीय राष्ट्र जागरण विराट गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा एवं भव्य कलश यात्रा को भाजपा प्रदेश प्रवक्ता पूर्व राज्य सभा सांसद जुगुल किसोर ने झंडी दिखाकर कलश यात्रा को रवाना किया साथ में भाजपा मंडल अध्यक्ष सर्वेश सिंह पूर्व प्रधान मास्टर दिनेश कुमार भार्गव, मितौली ग्राम प्रधान नीरज कश्यप, प्राचार्या राजकुमार शुक्ला ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, जिसमें हजारों की संख्या में माताओं बहनों ने सिर पर कलश रखकर कस्बे का भ्रमण करते हुए मितौली के पंच मुखी हनुमान मंदिर के निकट सारदा कैनाल से वैदिक मंत्रों चार के साथ कलसों में जल भरा गया। गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा भक्ति गीतों और मां गायत्री के जयकारों से पूरा कस्बा गुंजायमान रहा। कस्बे के विभिन्न मार्गो से होते हुए कलश यात्रा पुनः यज्ञ स्थल पहुंची जहां मंत्रोच्चारण के साथ कलश स्थापना की गई। शांतिकुंज से आए हुए परम विद्वान आचार्य टोली नायक योगेश पटेल, सहायक विकास भाई, गायक महादेव शाहू , अमरपाल ने कलश यात्रा में शामिल हुई सैकड़ों की संख्या में माताओं बहनों का अभिनंदन किया। युग ऋषि वेद मूर्ति पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के सूक्ष्म संरक्षण व ऋषि तंत्र के मार्गदर्शन में मानव मात्र को सद्बुद्धि प्रदान कर सन्मार्ग में प्रेरित करने के उद्देश्य से उपरोक्त कार्यक्रम संपन्न किए जाएंगे । इस अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार मितौली के समस्त सक्रिय कार्यकर्ता एवं परिजन मौजूद रहे। कार्यक्रम 20 नवम्बर 2023 दिन सोमवार से 23 नवम्बर गुरुवार तक किये जायेंगे।

बाबा की सरकार में भी भ्रष्टाचार जिम्मेदार मौन

ठेकेदार और जेई की मिली भगत से घटिया सामग्री से हो रहा टंकी निर्माण

❖ घटिया सामग्री से बनी पानी की टंकी एक तरफ बन भी नहीं पाई दूसरी ओर बाउंड्री गिरने की कगार पर।

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। सीतापुर के पहला की ग्राम पंचायत महिमापुर कंदाई में बन रही पानी की टंकी जिसमें करवाया जा रहा घटिया सामग्री का प्रयोग जिसकी वजह से टंकी एक तरफ बनकर तैयार भी नहीं हो पाई और दूसरी तरफ फाउंडेशन की चारों तरफ बनी दीवार में आई दरार। आपको बता दें जहां पर पानी की टंकी बनी है उसके चारों तरफ बाउंड्री बनाया गया है जिसमें बाउंड्री एक तरफ तो बिल्कुल गिरने की कगार पर पहुंच गई है ओर दूसरी तरफ दरारें आ गए हैं वही कहना यह है लोगों का की यह अभी एक महीना भी नहीं होई है बने लेकिन घटिया सामग्री का इस्तेमाल करने की वजह से यह दशा हुई है वहीं पर वहां के ठेकेदार अजय मिश्रा के द्वारा पड़ोस में खेती कर रहे किसान हंसराज वर्मा को प्रताड़ित किया जा रहा है जिस का कहना है यह कि मैं आपने खेत में पानी लगाए थे तो थोड़ा पानी दीवाल के तरफ चला गया जिसके वजह से बन रही टंकी में खटिया सामग्री बनाया गया है तो हंसराज वर्मा का कहना है ना तो इसमें सही से मसाला लगाया गया है ना इसमें की न्यू मजबूत है तो बाउंड्री तो दरार आएगी ही और ठेकेदार द्वारा मुझे परेशान किया जा रहा और ?50000 मागा जा रहा है और ठेकेदार अजय मिश्रा जी के द्वारा बोले की पैसा ना दे तो मजदूरी करने का दबाव बनाया जा रहा है कहना यह भी है अगर पैसा यह मजदूरी नहीं किया तो आप के नाम थाने में प्रार्थना पत्र दे कर बंद करवा दूंगा क्या इसी तरह से ठेकेदार गरीब किसान को सताएंगे क्या इस पर कोई करवाई हो पाएगी की इसे एक हादसा समझकर भूल जाएगा एक तरफ ठेकेदार पानी की टंकी बावा रहा है और उसमें भ्रष्टाचार भी कर रहा है पर जिम्मेदार मौन है एक तरफ योगी सरकार का कहना है की हमारी सरकार में भ्रष्टाचार बेईमान को कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी क्या कोई इस पर कार्यवाही हो पाएगी अब देखना है

एक नज़र

नफर वारंटी अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पचदेवरा, हरदोई। जनपद हरदोई में अपराध व अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस अधीक्षक केशव चंद गोस्वामी द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिससे अपराध और अपराधियों पर लगाम लग सके। जिसके क्रम में सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिए गए उसी निर्देश का पालन करते हुए पुलिस अपराधियों पर कार्रवाई करते हुए नजर आ रही हैं। मंगलवार को थाना पचदेवरा थाना प्रभारी व पुलिस टीम द्वारा एक नफर वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सफलता पाई गयी। काफी दिनों से यह अभियुक्त पुलिस से आंख मिचौली खेल फरार चल रहा था। मंगलवार को पचदेवरा पुलिस ने थाना क्षेत्र के लखनौर गांव निवासी अभियुक्त सागर उर्फ प्रेमसागर पुत्र बालकराम को लखनौर गांव से गिरफ्तार कर लिया। पचदेवरा इंस्पेक्टर विद्या सागर पाल ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय के सुपुर्द करके विधिक कार्यवाही की जायेगी।

शाहजहांपुर के नवीन कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह के साथ चीनी मिलों एवं विभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी महोदय ने पराई सत्र प्रारंभ होने तथा बकाया भुगतान के विषय में जानकारी ली। उन्हें बताया गया कि तिलहर चीनी मिल का पेराई सत्र 24 नवंबर से प्रारंभ होना है। मकसूदापुर चीनी मिल का पिछ्ले वर्ष का 47 करोड़ 94 लख रुपए भुगतान अभी बकाया है। मकसूदापुर चीनी मिल के प्रतिनिधि ने अवगत कराया की 20 से 25 दिसंबर के बीच पिछ्ले वर्ष के बकाया भुगतान को किसानों के खाते में प्रेषित कर दिया जाएगा। निगोही, रोजा,तिलहर तथा पुवाया चीनी मिलो का लगभग संपूर्ण भुगतान किया जा चुका है। जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि किसानों का शोषण बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने सुरक्षा की व्यवस्था को चाक चौबंद रखने के निर्देश दिए, इस हेतु उन्होंने प्रत्येक चीनी मिल को एक सुरक्षा अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सुरक्षा मॉकड्रिल भी समय-समय पर करते रहे। उन्होंने निर्देश दिए कि गन्ना ढुलाई करने वाले समस्त वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगे होना अनिवार्य हैं। इस कार्य को युद्ध स्तर पर करना सुनिश्चित करें। डीएम ने कहा कि बिचौलिए तथा दलालों के वर्चस्व को खत्म करना अनिवार्य है, इनकी वजह से किसानों का वृहद स्तर पर शोषण होता है। इस तरह के लोगों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में जिलाधिकारी, जिला गन्ना अधिकारी तथा समस्त चीनी मिलों के प्रतिनिधि तथा अधिकारी मौजूद रहे।

मुकदमा दर्ज हुआ तो परिजनों ने किया शव का अंतिम संस्कार

सिकंदराबाद। धौरहरा के सरसवा-महराजनगर में नीमगांव के तिगोड़वा निवासी युवक की हत्या के मामले में जब पोस्टमार्टम के बाद शव घर लाया गया तो पुलिस की सुस्त शैली से खफा परिवार वालों ने शव का अंतिम संस्कार करने से इन्कार कर दिया। मृतक का शव 24 घंटे तक घर में रखा रहा। मामले में जब पांच आरोपियों पर हत्या का केस दर्ज हुआ तो परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार किया। नीमगांव थाने के तिगोड़वा गांव निवासी अनूप चौहान पुत्र परशुराम (26) शुक्रवार को अपनी पत्नी सुधारा के साथ ससुराल धौरहरा के मनमतपुर-गुदरिया गांव गया था। शनिवार की शाम वह ससुराल से गुटखा खरीदने की बात कहकर निकला था। रविवार की सुबह अनूप का शव सरसवा-महाराजनगर रोड पर महराजनगर के समीप ही रपटा पुल के नीचे पड़ा मिला था। परिजन हत्या का आरोप लगाते रहे, लेकिन धौरहरा पुलिस हादसा साबित करने में जुटी रही। पोस्टमार्टम के बाद रविवार की शाम करीब सात बजे मृतक का शव गांव लाया गया तो परिजनों ने गांव के ही चार आरोपियों पर हत्या का आरोप लगाया। मृतक का अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। सूचना पर नीमगांव, मितौली, हैदराबाद, खीरी व फरधान थाने की पुलिस गांव पहुंची। परिजन आरोपियों पर मुकदमा दर्ज करने और गिरफ्तारी की मांग पर अड़े रहे। नीमगांव थानाध्यक्ष कौशल किशोर ने धौरहरा कोतवाली प्रभारी दिनेश सिंह से बात की। इसके बाद मृतक के पिता परशुराम ने धौरहरा कोतवाली पहुंचकर गांव के ही राजेंद्र, महेंद्र, बबलू व राहुल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई। इसके बाद परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार किया।

नीमगांव क्षेत्र के दो युवकों की हत्या से 30 घंटे तक हलकान रही पुलिस

नीमगांव पुलिस रविवार दोपहर से सोमवार की देर शाम तक उलझी रही। पहले बेहजम निवासी सराफा व्यापारी की हत्या मामले में परिजनों की मान-मनौव्वल और रात में तिगोड़वा गांव में शांति-व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी ने पुलिस की नींद उड़ा दी। बेहजम निवासी रोहित सोनी का शव सदर कोतवाली के एलआरपी चौकी क्षेत्र में मिला था। मामले में हत्या का मुकदमा दर्ज हुआ था। परिजनों ने बेहजम चौराहे पर जाम लगाकर प्रदर्शन किया था।

थाना कटरा पुलिस द्वारा थाना क्षेत्र में हत्या कर शव को छिपाने व ईको गाडी लूटकर ले जाने वाले प्रकाश में आये शातिर बाल अपचारी को ईको कार के साथ किया गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद शाहजहाँपुर के निर्देशानुसार जनपद मे वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में चलाये गये अभियान के क्रम में व संजीव कुमार बाजपेयी, अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के पर्यवेक्षण व प्रियांक जैन क्षेत्राधिकारी तिलहर के कुशल निर्देशन मे थाना कटरा की पुलिस टीम को बड़ी कामयाबी हासिल हुई। उक्त प्रकरण के सम्बन्ध मे थाना हाजा पर मु0अ0सं0 598/2023 धारा 302/201 भादवि बनाम 1. अक्षय गुप्ता S/O रामसेवक 2. अर्जुन गुप्ता S/O रामसवेक गुप्ता 3. मुकुल गुप्ता S/O रामसेवक गुप्ता 4. रामसेवक गुप्ता S/O अज्ञात निवासीगण निकट सेटेलाइट मौर्या ढाबा वाली गली बरादरी जनपद बरेली के विरूद्ध पंजीकृत किया गया । विवेचानात्मक कार्यवाही के दौरान पाया गया कि मृतक शिवम गुप्ता पुत्र चन्द्रपाल गुप्ता निवासी ग्राम दलपुरा थाना फरीदपुर जनपद बरेली द्वारा अपनी स्वयं की ईको गाडी तिलहर के रहने वाले तौहीद को बिक्री करने के उपरान्त वर्तमान में नरेश कुमार S/O बालकराम निवासी मो0 घेरचौबा थाना तिलहर जनपद शाहजहांपुर हाल पता सर्किट हाउस डी 19 हाईडल कालोनी थाना कोतवाली जनपद बरेली की ईको गाडी संख्या क्क25 श्वञ्ज 9824 टैक्सी पर चला रहा था । अभियुक्त गण द्वारा दिनांक 16.11.2023 की रात्रि में 23.00 बजे ईको गाडी सं0 UP 25 ET 9824 को 1000 रूपये में बरेली से खुदांगज जाने के लिए बुक कर गाडी लूटने के ईरादे से लेकर आये तथा स्टेशन रोड के पास झाडियों में ईटों से मार मारकर हत्या कर दी थी । हत्या करने के उपरान्त ईको गाडी लूटकर चले गये थे । हत्या करने वाले अभियुक्त गण की तलाश करने के क्रम में कटरा से बरेली तक मार्ग पर पडने वाले सीसीटीवी कैमरो को खंगाला गया तथा टैक्सी चलाने वाले कई ड्राईवरो से वार्ता करने के पश्चात तलाश किया गया तो 1. बाल अपचारी कपिल(काल्पनिक नाम) 2. अभिषेक पुत्र मुन्नालाल निवासी ग्राम कल्याणपुर बरेली थाना फरीदपुर जनपद बरेली 3. चन्दन पुत्र अमर सिह निवासी सिदपुर थाना सिदपुरा जिला कासगंज का नाम प्रकाश में आया । थाना कटरा पुलिस द्वारा दौराने गस्त सूचना मिली कि अभियुक्त गण पुनः घटना की फिराक में NH30 औवर ब्रिज के किनारे सर्विस रोड पर ग्राम लाईखेडा की तरफ एकान्त व अन्धेरे मे एक इको गाडी में बैठे हैं मुखबिर खास की सूचना पर पुलिस बल ने आवश्यक बल प्रयोग कर फतेहगंज पूर्वी जाने वाले रास्ते NH30 औवर ब्रिज के किनारे सर्विस रोड पर ग्राम लाईखेडा की तरफ समय करीब 03.40 बजे पकड लिया । पकडे गये व्यक्ति ने अपना नाम बाल अपचारी कपिल(काल्पनिक नाम) बताया । जिसके कब्जे से ईको कार नं0 UP 25 ET 9824 बरामद हुई तथा बाल अपचारी की निशानदेही पर ही मृतक शिवम गुप्ता की हत्या में प्रयोग में लायी गयी ईट को बरामद किया गया ।

कलश यात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ सप्त दिवसीय श्री गीतामानस सम्मेलन

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

नगर पंचायत काकोरी के श्री शीतला माता मंदिर श्री वनखण्डेस्वर धाम में कलस यात्रा निकाली गई जिसमें सैकड़ो भक्तो ने भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक के साथ ही श्री रुद्र यज्ञ का आरम्भ हुआ श्री राम दयालु दोसर वैश्य स्मारक ट्रस्ट द्वारा 58 वें श्री गीता मानस सम्मेलन में श्री राम कथा का भव्य आयोजन श्री अयोध्या धाम से पधारी मानस कोकिला देवी चंद्रकला के मुखारबिंद से किया जा रहा है प्रबंधक रमाकांत गुप्त ने बताया कि यह कार्यक्रम ब्रह्मलीन संतदास जी एवं सन्मार्ग गामी पूर्वज राम दयालु शिव दयालु गुप्त द्वारा अधिष्ठित विगत 57 वर्षो से निरंतर कार्यक्रम हो रहा है इसमे मुख्य रूप से मंदिर के पुजारी लालता प्रसाद बाजपेई कार्यक्रम के संचालक डॉ सियावर शरण द्विवेदी(शास्त्री जी) स्वामी कांत गुप्त विष्णु कांत गुप्त अमर कांत गुप्त आचार्य विवेक सदाशिव बाजपेई सर्वेश द्विवेदी एवं भक्तगण उपस्तिथ रहे।

कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण हेतु करे आवेदन:-ऋचा गुप्ता

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

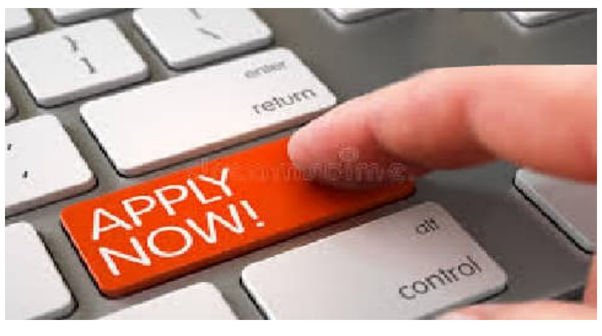

हरदोई। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी ऋृचा गुप्ता ने बताया है कि दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा दिव्यांगजन के हितार्थ कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण योजना संचालित की जा रही। इस योजना का लाभ 40 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांगता वाले दिव्यांगजन जिनकों जिनको विगत 03 वर्षो मे भारत सरकार/राज्य सरकार की किसी भी योजनान्तर्गत उपकरण प्राप्त न हुआ हो, वह अपना ऑनलाइन आवेदन वेबसाईट- http://divyangjanup.upsdc.gov.in पर जनसुविधा/लोकवाणी केंद्र के माध्यम से कराकर आवेदन पत्र की हार्ड कापी समस्त संलग्नकों सहित कार्यालय, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी विकास भवन कमरा नं0-16, हरदोई में किसी भी कार्य दिवस में उपलब्ध करायें। उन्होंने बताया कि कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण ऑनलाईन आवेदन करने हेतु दिव्यांगता दर्शाती हुई पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड, मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा निर्गत दिव्यांग प्रमाण पत्र (न्यूनतम 40 प्रतिशत), आय, जाति, निवास (तहसील/ग्राम प्रधान द्वारा निर्गत) मुख्य चिकित्साधिकारी अथवा नामित चिकित्सक द्वारा प्रदत्त दिव्यांगता से सम्बन्धित उपकरण का संस्तुति पत्र होना चाहिए। ऑनलाईन आवेदन में यदि किसी प्रकार की समस्या हो तो अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस अथवा दूरभाष नम्बर- 05852 358921 पर सम्पर्क कर सकते है।

दिव्यांग पेंशनधारक बनवाये अपना राशनकार्ड:-ऋचा गुप्ता

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी ऋृचा गुप्ता ने बताया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उ0प्र0 के अध्यासित समस्त परिवारों को रोजगार का पर्याप्त अवसर प्रदान करने, लोक कल्याणकारी योजनाओं की पारदर्शिता एवं जनसामान्य हेतु संचालित योजनाओं का अच्छादन बढाने के उद्देश्य से फैमिली आई0डी0 एक परिवार एक पहचान योजना संचालित की गयी है। उन्होंने बताया कि विभिन्न पेंशन योजनाओं के डाटावेस को राशनकार्ड संख्या/ फैमिली आई0डी0 से सीडिंग कराने पर जनपद में 4015 ऐसे लाभार्थी उभरकर सामने आये है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में आच्छादित नहीं है। अतः जनपद के दिव्यांग पेंशनधारक जो राशनकार्ड से वंचित हैं वह अपना राशनकार्ड/फैमिली आई0डी0 पात्रतानुसार बनवाकर कार्यालय, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी, विकास भवन कमरा नं0-16, में किसी भी कार्य दिवस में उपलब्ध कराये, अन्यथा उनकी पेंशन बाधित हो सकती है। ऑनलाईन आवेदन में यदि किसी प्रकार की समस्या हो तो अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस अथवा दूरभाष नम्बर- 05852 358921 पर सम्पर्क कर सकते है।

क्लस्टर बेस्ड ट्रेंडिंग द्वारा 108 व 102 एंबुलेंस कर्मियों के प्रशिक्षण का निरीक्षण अधीक्षक डॉ चन्दन ने किया

द अचीवर टाइम्स, निखिल मिश्रा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हर जन मानस को 108 व 102 एम्बुलेंस के साथ मारीजो को स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर मिल सके इसके लिए। ई एम आर आई ग्रीन हेल्थ सर्विस संस्था के द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए 108 व 102 एंबुलेंस कर्मियों को तीन जिलों के कर्मचारियों को अलग अलग बैच प्रशिक्षण दिया जा रहा है । आज दिनाँक 20/11/2023 को सरोजनी नगर समुदायिक स्वास्थ केन्द्र के अधीक्षक चन्दन यादव ट्रेनिंग का निरीक्षण किया रिस्पांस टाइम को समझाया ताकि मरीजों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधा समय-समय पर प्रदान की जा सके।

फ्लिपकार्ट ने उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड के साथ एमओयू पर किया हस्ताक्षर

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने फ्लिपकार्ट समर्थ प्रोग्राम के तहत समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी से हाथ मिलाया है। एमओयू का उद्देश्य कारीगरों को सशक्त करने, हथकरघा एवं हस्तशिल्प कारोबार के लिए अवसर बढ़ाने और महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए अवसर बढ़ाने पर फोकस करते हुए पूर्वोत्तर में सभी संबंधित पक्षों का हित सुनिश्चित करना है 1977 में स्थापित उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड का लक्ष्य शिल्पकारों को संबंधित बाजारों एवं उपभोक्ताओं से जोड़ते हुए क्षेत्र के स्थानीय शिल्प को बढ़ावा देना और उनका विकास सुनिश्चित करना है। उपभोक्ताओं को सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करते हुए क्रिएटर्स के लिए आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास के अवसर सृजित करना एनईएचएचडीसी के मिशन का हिस्सा है। इस अवसर पर फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर श्री रजनीश कुमार ने कहा भारत के आर्थिक विकास को गति देने के लिए अथक प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए फ्लिपकार्ट लाखों स्थानीय कारोबारियों को उनके ई-कॉमर्स के सफर में सहयोग के लिए समर्पित है। हम फ्लिपकार्ट की क्षमताओं और विशेषज्ञता का लाभ लेते हुए विकास के अवसर सृजित करने की दिशा में उद्यमियों को प्रेरित करने के लिए उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड के साथ गठजोड़ को लेकर उत्साहित हैं। इस एमओयू के माध्यम से हमें एक ऐसे सफर पर बढ़ने की खुशी है, जो कारोबारियों को सशक्त करेगा, उनके मन में विकास की विचारधारा को प्रोत्साहित करेगा और पूर्वोत्तर क्षेत्र के कारीगरों, बुनकरों एवं शिल्पकारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएगा। इस गठजोड़ को लेकर उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर ब्रिगेडियर (रिटायर्ड) राजीव कुमार सिंह ने कहा कारीगरों, हथकरघा एवं हस्तशिल्प कारोबार के विकास को बढ़ावा देना और साथ ही महिला स्वयं सहायता समूहों को समावेशी अवसर प्रदान करना राज्य के लिए महत्वपूर्ण है। फ्लिपकार्ट समर्थ के साथ की गई यह रणनीतिक साझेदारी राज्य में स्थानीय कारोबार को सशक्त करने की दिशा में उत्तर पूर्व हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम लिमिटेड के लक्ष्य के ही अनुरूप है। इस पहल के माध्यम से हमारा उद्देश्य ई-कॉमर्स के माध्यम से उनके लिए कारोबार के अवसर बढ़ाना और राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को गति देना है। 2019 में लॉन्च किया गया फ्लिपकार्ट समर्थ एक देशव्यापी पहल है, जिसका उद्देश्य कारीगरों, बुनकरों एवं दिव्यांगों समेत वंचित समुदायों के विकास एवं उनकी आजीवका में सुधार के लिए ई-कॉमर्स तक उनकी पहुंच को सुनिश्चित करना है। इस पहल के तहत इन सेलर्स को ऑनबोर्डिंग, फ्री कैटलॉगिंग, मार्केटिंग सपोर्ट, अकाउंट एडमिनिस्ट्रेशन, बिजनेस इनसाइट्स और वेयरहाउसिंग सपोर्ट के मामले में सहयोग प्रदान किया जाता है, जिससे वे फ्लिपकार्ट मार्केटप्लेस पर अपना कारोबार शुरू कर सकें।

अयोध्या में परिक्रमा के मद्देनजर अधिकारियो को दिए गए निर्देश

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या जिलाधिकारी नितीश कुमार व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नय्यर द्वारा परिक्रमा/कार्तिक पूर्णिमा मेला में लगे समस्त सुपर जोनल/जोनल/सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस विभाग के राजपत्रित अधिकारीगण की अंतर्राष्ट्रीय राम कथा संग्रहालय के सभागार में संयुक्त ब्रीफिंग की गयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने परिक्रमा मेला में लगे समस्त सुपर जोनल/जोनल/सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस विभाग के राजपत्रित अधिकारीगण को उनके दायित्वों के सम्बंध में ब्रीफ करते हुये कहा कि सभी मजिस्ट्रेट अपने ड्युटी स्थल पर समय से पूर्व पहुंचे तथा उन्हें अपने तैनाती क्षेत्र के समीपस्त समस्त जानकारियां यथा-एम्बुलेंस व्यवस्था, स्वास्थ्य शिविर, खोया पाया केन्द्र, पेयजल व्यवस्था आदि की जानकारी कर ले। अपने तैनाती क्षेत्र की संवेदनशील स्थानों यथा-सकरा स्थान, पुलिया, निर्माणाधीन कार्य स्थल इत्यादि जहां पर भी बेरीकेटिंग की गयी है आदि को देख ले और यदि कहीं पर भी और वैलिडेटिंग करने की आवश्यकता है तो उसे संबंधित ठेकेदार से समन्वय कर करवा लें। सभी मजिस्ट्रेट/पुलिस अधिकारी अपनी तैनाती क्षेत्र के स्थानीय निवासियों से भी सम्पर्क कर उनसे सौहार्द बनायें, जिससे कि किसी भी परिस्थिति में उनकी मदद ली जा सकें। उन्होंने कहा कि सभी मजिस्ट्रेट/पुलिस अधिकारी अपनी तैनाती सेक्टर के सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के प्रभारी होंगे।

सभी अधिकारीगण अपने तैनाती क्षेत्र का आज पुनः जायजा ले लें और यदि कहीं पर किसी भी प्रकार की कमी हो तो उसे दूर कर लें। यह सुनिश्चित कर लें कि किस स्थान पर किस प्रकार की समस्या उत्पन्न न होने पाए। उन्होंने कहा कि जिन-जिन स्थान पर भीड़ अधिक एकत्रित होने की संभावना हो वहां पर उसे मैनेज करने हेतु तैयारी पूर्व से ही कर ली जाए। उन्होंने कहा कि विगत परिक्रमा के दौरान जो भी समस्याएं आई थी उनसे सीख लेते हुए इस परिक्रमा में किसी भी प्रकार की समस्या ना आने पाए उसकी तैयारी पूर्ण रखें। उन्होंने एसपी सिटी को निर्देशित किया कि क्राउड मैनेजमेंट हेतु नियमित पी ए सिस्टम से एलाउंस किया जाए परिक्रमा के दौरान उपलब्ध कराई जारी सुविधाओं की जानकारी प्रदान की जाती रहे। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि इस बार परिक्रमा को सकुशल संपन्न कराए जाने हेतु सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं जल वेरीकेटिंग स्थाई कर दी गई है। जल सुरक्षा हेतु प्राइवेट गोताखोरों की व्यवस्था के साथ-साथ जल पुलिस एवं एसडीआरएफ के जवान भी तैनात किए गए हैं। 14 कोसी परिक्रमा को सकुशल संपन्न कराने हेतु संपूर्ण क्षेत्र को 5 जोन में विभाजित किया गया है तथा इस हेतु एक सुपर जोनल मजिस्ट्रेट, पांच जोनल मजिस्ट्रेट, 11 सेक्टर मजिस्ट्रेट, दो सब सेक्टर, 24 स्टैटिक मजिस्ट्रेट लगाए गए हैं। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि सभी मजिस्ट्रेट/पुलिस अधिकारीगण अपने सेक्टर में विभिन्न सामाजिक संगठनों आदि द्वारा श्रद्धालुओं के खाने पीने के लिए जो स्टाल लगाये गये है उनके संचालकों से संवाद बना लें और उन स्थानों पर साफ सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जाय। उन्होंने कहा कि सभी मजिस्ट्रेट/पुलिस अधिकारीगण तब तक अपना ड्युटी प्वाइंट न छोड़े जब तक कि उनका प्रतिस्थानी न आ जायें। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारीगण उत्सवधर्मिता को वास्तविक रूप से चरितार्थ करें तथा अपने ड्युटी धर्म का पालन पूर्ण मनोयोग से करें और इसके लिए सभी में गर्व का भाव होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी तैनात मजिस्ट्रेटों को अपने क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारियां होनी चाहिए तथा रेलवे क्रासिंग पर तैनात अधिकारीगण विशेष ध्यान रखेंकि क्रासिंग पर लाइटिंग की व्यवस्था अच्छी हों, बेरीकेटिंग मजबूत रहें तथा क्रासिंग के स्थानों पर रात्रि के समय विशेष ध्यान देने की जरूरत है। रेलवे क्रासिंग के पास रेलवे का स्टाफ भी मजिस्ट्रेटों/पुलिस अधिकारियों की सहायता हेतु उपलब्ध रहेंगे, उनसे भी समन्वय बनाकर कार्य करें तथा सभी मजिस्ट्रेट अपने तैनाती क्षेत्र के सफाई कर्मचारियों के बारे में भी जानकारी रखेंगे और साफ सफाई सुनिश्चित करवायेंगे। उन्होंने अन्त में सभी सुपर जोनल/जोनल/सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस विभाग के अधिकारीगण तथा आम नागरिकों को परिक्रमा/कार्तिक पूर्णिमा मेला की शुभकामनायें एवं बधाई दी।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नय्यर ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रथम पाली में तैनात सभी मजिस्ट्रेट/पुलिस अधिकारीगण अपने तैनाती क्षेत्र को पूर्व से ही देख लें, सभी तैनात मजिस्ट्रेट व साथ में तैनात किये गये पुलिस अधिकारीगण आपस में समन्वय कर अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारीगण अपने तैनाती क्षेत्र में स्थित धार्मिक स्थलों तथा रेलवे क्रासिंगों पर विशेष सर्तकता रखेंगे। बैठक में 14 कोसी परिक्रमा के लिए तैनात सुपर जोनल, जोनल, सेक्टर मजिस्टेऊट एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। 14 कोसी/पंचकोसी परिक्रमा के लिए 2 शिफ्टों में ड्युटी लगायी गयी है पूरे मेला क्षेत्र को 5 जोन में बांटा गया है, जिसमें सभी जोन में सेक्टर भी बनाये गये है तथा पांचों में स्टैटिक मजिस्ट्रेट व पुलिस अधिकारी तैनात किये गये है। कार्यक्रम का संचालन अपर जिलाधिकारी नगर/मेलाधिकारी सलिल कुमार पटेल ने किया तथा पुलिस अधीक्षक नगर मधुबन कुमार सिंह ने पुलिस विभाग के अन्य बिन्दुओं की जानकारी दी तथा मेला को बेहतर ढंग से सम्पन्न कराने हेतु घाट जोन, नागेश्वर नाथ जोन, हनुमानगढ़ी जोन, कनक भवन जोन, यातायात एवं भीड़ नियंत्रण जोन आदि जोन भी बनाये गये है। सभी अधिकारियों से अपेक्षा की गयी है कि अपने-अपने क्षेत्रों का गहनता से मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारी भ्रमण कर लें तथा अपने-अपने क्षेत्र में तैनात अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ आवश्यक समन्वय भी कर लें।

इस बैठक में अपर जिलाधिकारी स्तर, पुलिस अधीक्षक स्तर, उपजिलाधिकारी स्तर, क्षेत्राधिकारी स्तर के अलावा अन्य मजिस्ट्रेट, पुलिस अधिकारी आदि उपस्थित थे। सभी से मेला को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु आहवान किया गया तथा कोई भी समस्या हो तो वरिष्ठ अधिकारियों के संज्ञान में ला सकते है। महिला सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने हेतु निर्देश दिया गया।

एक नज़र

रामलला के पूजन पद्धति के लिए 20 अर्चकों का होगा चयन

अयोध्या। रामलला के अर्चक के लिए 3000 लोगों ने किया था ऑनलाइन आवेदन । प्रशिक्षण के लिए 225 आवेदकों का हुआ साक्षात्कार । इस दौरान राम लला के पूजन पद्धति के लिए 20 अर्चकों का चयन होगा । भगवान की प्रतिमा के साथ होगा प्रायोगिक प्रशिक्षण । राम मंदिर ट्रस्ट के धार्मिक समिति का दो दिवसीय बैठक संपन्न ।दो दिवसीय बैठक के बाद गोविंद देवगिरी ने कहा कि रामलला की पूजन विधि की तैयारी की गई नियमावली । रामलला के प्रतिदिन होने वाले पूजन अर्चन के साथ वर्ष में होने वाले उत्सव पर भी हुआ मंथन । गुरुकुल के तर्ज पर साक्षात्कार में तय किए गए लोगों को मिलेगा प्रशिक्षण । रामानंद संप्रदाय की परंपरागत रूप से पूजन अर्चन के लिए तैयार किए जाएंगे अर्चक । अयोध्या में ही जल्द शुरू होगा अर्चकों के प्रशिक्षण का कार्य ।

दशरथ कैकेई संवाद, राम वन गमन, केवट राम संवाद की हुई प्रस्तुति

रुदौली अयोध्या। रुदौली के ग्राम सभा सरैठा में आयोजित 10 दिवसीय लीला की कल छठवें दिवस की लीला की प्रस्तुति की गई। जिसमें राजा दशरथ और कैकेई का संवाद दिखाया गया जिसमें राजा दशरथ से कैकेई ने अपने दो वरदान मांगे एक भगवान राम को वनवास व दूसरा भरत को राज गद्दी उसको लेकर दशरथ व्याकुल हो गए उन्होंने रानी कैकेई से इसके बदले कोई दूसरा वर मांगने का अनुरोध करने लगे रानी कोपभवन चली गई उसके बाद भगवान राम ने सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ पितृ और मातृ धर्म का पालन करते हुए वन की ओर रवाना हुए रास्ते में गंगा घाट पार करते वक्त केवट से उनकी मुलाकात हुई केवट राम संवाद हुआ। लोग इस लीला को देखकर काफी भावुक हुए तथा मौजूद सभी प्रत्यक्षदर्शियों ने कमेटी के समस्त कलाकारों को धन्यवाद दिया कार्यक्रम में पहुंचे वरिष्ठ पत्रकार व प्रधान प्रतिनिधि बनगांवा जितेंद्र यादव का वरिष्ठ पत्रकार व आदर्श श्री राम लीला समिति सरैठा नितेश सिंह ने स्वागत किया।

अयोध्या में माटी रत्न के तहत सम्मानित होने वालो की घोषणा 22 को

अयोध्या। अशफाक उल्ला खां मेमोरियल शहीद शोध संस्थान द्वारा प्रति वर्ष दिए जाने वाले माटी रतन सम्मान पाने वालों की घोषणा 22 नवंबर को घोषित किया जाएगा। संस्थान के प्रबंध निदेशक सूर्य कांत पाण्डेय ने बताया कि इसके लिए गठित चयन समिति ने नामों का चयन करके संस्थान को सौंप दिया है। सम्मान की घोषणा अवंतिका होटल सभागार में आयोजित पत्रकार वार्ता में की जाएगी।श्री पाण्डेय ने बताया कि माटी रतन सम्मान पूर्वांचल के नोबल पुरस्कार की तरह प्रतिष्ठित है। देश में शहीदों की स्मृति में दिया जाने वाला यह एकमात्र सरकारी गैर-सरकारी सम्मान है। हिन्दी उर्दू के देश के जाने-माने साहित्यकार प्राप्त कर चुके हैं। माटी रतन सम्मान पाने वालों को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण जैसे सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इसमें बेकल उत्साही,अदम गोंडवी, प्रोफेसर मलिकजादा मंजूर, अनवर जलालपुरी,डा विजय बहादुर सिंह,डा दूधनाथ सिंह, अरुणिमा सिन्हा, नेहा सिंह राठौर प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि सम्मान काकोरी एक्शन के शहादत दिवस 19 दिसंबर को भव्य समारोह आयोजित करके प्रदान किया जाएगा। 1998 को ग्राम सभा सनेथू में प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम का यह पचीसवां वर्ष है। यह रजत जयंती समारोह के रूप में मनाया जाएगा।

सरयू स्नान घाट पर डूब रही बच्ची को जल पुलिस ने बचाया

अयोध्या। अयोध्या में सरयू स्नान के दौरान अचानक काटन की वजह से बैरिकेडिंग में लगी जाल के नीचे से क्रास हो जाने से के कारण पलक पुत्री जयपाल जिसकी उम्र लगभग 07 वर्ष वैशाली गाजियाबाद की रहनी वाली है जो डूब रही थी तत्काल तत्परता दिखाते हुए ड्यूटी पर तैनात जल पुलिस प्रभारी रुबे प्रताप मौर्य तेज तर्रार कांस्टेबल नित्यानन्द यादव, कांस्टेबल मुन्ना यादव व स्थानीय नाविक विशाल माझी,2 विशाल माझी बलराम यादव ने गहरे पानी में रेस्क्यू कर बच्ची को सुरक्षित बाहर निकाला और परिजनों को सुपुर्द किया जिनके अथक प्रयास को देख कर स्थानीय लोगों ने जल पुलिस को सैल्यूट कर और दिल से धन्यवाद दिया अयोध्या में जल पुलिस की तैनाती से अक्सर डूबते लोगों को बचाने में समर्थ होने के साथ लोगों में सुरक्षा की भावना को बढ़ावा मिला है जल पुलिस की इस साहसिक कार्य से जनपद अयोध्या ही नहीं आस पास के अन्य जनपदों के साथ जमकर सराहना किया जा रहा है।

अयोध्या सरयू तट पर संपन्न हुई छठ महापर्व

अयोध्या। अयोध्या सरयू तट पर बड़ी संख्या में व्रती महिलाओं ने सूर्य के उदय होने के साथ सूर्यदेव का पूजन किया । इस अवसर पर छठ पर्व की महता के अनुरूप विधि विधान से सूर्यदेव को अर्घ्य देकर भांति भांति के फल तथा ठोकवा जैसी विशिष्ट मिष्ठान का भोग अर्पित किया । इस दौरान आस्था,उत्साह व उल्लास चरम पर रहा व्रती महिलाओं के साथ सहयोगी के रूप में बड़ी संख्या, में पुरुष व बच्चे भी सरयू तट पर पहुंचे । जिसके सुरक्षा की दृष्टि से देखते हुए जल पुलिस व पुलिस मित्रों के सहयोग से छठ पर्व को सकुशल एवं शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने के लिए जल पुलिस प्रभारी रुबे प्रताप मौर्य,कांस्टेबल नित्यानन्द यादव ,कांस्टेबल अखिलेश यादव, कांस्टेबल लालमणि के कांस्टेबल कमरुद्दीन व पुलिस मित्र के विजय कुमार, अंकित मोदनवाल, सागर सोनी के द्वारा संपन्न किया गया ।

गुरुकुलम शिक्षण संस्थान जखाव में क्विज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

संवाददाता

भदोही। सोमवार को गुरुकुलम शिक्षण संस्थान जखांव गोपीगंज में 'क्विज प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ समाजसेवी एवं उपन्यासकार डा. जे. एस. बिंद ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर अपने संबोधन में छात्र-छात्राओं ने अपनी वाक्पटुता एवं ज्ञान से सभी के समक्ष अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन प्रस्तुत कर सबको अचंभित कर दिया। कार्यक्रम का आरंभ डा. जे. एस. बिंद ने किया। डॉक्टर जे.एस. बिंद ने इस प्रकार के आयोजन को विद्यार्थियों के ज्ञान एवं सर्वांगीण विकास के लिए बेहतर बताया। इस प्रतियोगिता के आधार पर विद्यार्थियों ने अपने अपने वर्ग समूह के बच्चों के सामने प्रश्नों के माध्यम से शिक्षा का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया तथा यह बताने का प्रयास किया कि पूर्ण विकास के लिए पुस्तक के प्रश्नोत्तरीय ज्ञान के साथ-साथ वैश्विक, व्यावहारिक एवं सामाजिक ज्ञान भी आवश्यक है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षक शिक्षिकाओं ने भी अपना अपूर्व सहयोग दिया एवं छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्द्धन किया। इस अवसर पर संस्थान के सह निदेशक रोहित सिंह द्वारा डॉ बिंद को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस दौरान गोपीगंज चेयर मैन श्री जितेंद्र गुप्ता, अमरेंद्र लाल कर्ण (प्राचार्य), बालेश्वर सिंह, राहुल यादव, अवधेश मिश्र, शिव कुमार, राकेश बिंद, एवं बड़ी संख्या में बच्चे उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में उदय सिंह, अर्पित यादव, आनंद साहू प्रथम, रितिका, खुशी, दिव्यांशु द्वितीय एवं ईशा, आशुतोष, आस्था का समूह तृतीय स्थान पर रहा। प्रतियोगिता का संचालन पंकज सिंह ने किया।

अयोध्या में हनुमान गढ़ी का दर्शन पूजन करके किया अमन चैन की कामना

संवाददाता

अयोध्या। राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे ने राम जन्म भूमि और बजरंगबली का किया दर्शन देश में अमन चैन और खुशहाली की प्रार्थना किया । राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी और पार्टी विस्तार की की कामना। यह जानकारी देते हुए राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश महासचिव विश्वेष नाथ मिश्रा सुडडू मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय प्रवक्ता जनपद में पार्टी के तरफ से आयोजित कार्यक्रम के बाद पार्टी के साथियों के साथ राम जन्म भूमि और बजरंगबली के दर्शन किए भगवान राम जन्मभूमि के स्थल पर बैठकर उन्होंने राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी जयंत सिंह के लिए तथा पार्टी तथा देश के लिए प्रार्थना किया । उन्होंने बताया कि भगवान राम आदर्श रामराज्य की परिकल्पना जो गांधी जी और चौधरी चरण सिंह सिंह की थी उसी को साकार करने का प्रयास हमारे अध्यक्ष जयंत चौधरी जी कर रहे हैं । बजरंगबली के दर्शन के उपरांत होने प्रार्थना किया कि हमारे देश के दुष्टों का संघार हो और हमारी सनातन संस्कृति और देश में आपसी भाईचारा बना रहे।

मार्ग दुर्घटना में घायल विमल के ऑपरेशन के लिए एक लाख रुपए की सहायता राशि देंगे हरिओम तिवारी

संवाददाता

सोहावल अयोध्या। मार्ग दुर्घटना का शिकार होकर कोमा में चले गएबीकापुर निवासी विमल कुमार मिश्रा के ऑपरेशन में सहयोग करने को ?1 लाख की नगद सहायता राशि जिले के प्रसिद्ध समाजसेवी व उद्यमी हरिओम तिवारी करेंगे गायत्व्य हो कि वार्ड नंबर 11 के तेंदुआ माफी निवासी विमल मिश्रा की एक मार्ग दुर्घटना के चलते वह कोमा में चले गए द्व धन भाव के चलतेउनके इलाज मैं समस्याएं आ रही हैं डॉक्टर ने उनके इलाज को ऑपरेशन की सलाह दी है, धन भाव से जूझ रहे विमल के ऑपरेशन की बात टाउन एरिया के अध्यक्ष राकेश पांडे राणा के जरिए जब हरिओम तिवारी को लगी तो उन्होंने उनसे कहा कि इलाज में किसी प्रकार की कमी नहीं आनी चाहिए , उन्होंने पांडे को बताया हम इलाज में ?100000 की सहायता देंगे, ज्ञात हो की हरिओम तिवारी इस समय दुबई में है वहां उन्होंने एक नई फैक्ट्री डाली हैद्व उसी की देखरेख में गए हैं द्व 25 तारीख को वह लखनऊ लौटेंगे तभी पीड़ित परिवार से मिलकर वह सहायता राशि भेंट करेंगे उनके इस घोषणा से क्षेत्र वासियों ने हर्ष प्रकट किया है ।

अयोध्या कमिश्नर गौरव दयाल की अध्यक्षता में हुई बैठक

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या मण्डलायुक्त गौरव दयाल की अध्यक्षता में मण्डलीय उद्योग बन्धु की बैठक आयुक्त सभागार में आहुत की गयी। इस अवसर पर मण्डलायुक्त ने गत बैठक में लिये गये निर्णयों के अनुपालन की एक-एक बिन्दु के प्रगति की बिन्दुवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि ग्लोबल इन्वस्टर्स समिति (जी0आई0एस0) के सम्बंध में समस्त उपायुक्त उद्योग अपने जनपद में एम0ओ0यू0 हस्ताक्षरित निवेशकों से समन्वय बनाते हुये उनके उद्योग स्थापनार्थ आ रही कठिनाईयों को दूर करायें तथा ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी हेतु उन्हें तैयार करें। उन्होंने कहा कि जनपद अयोध्या सहित मण्डल के सभी जनपदों में होटल निर्माण हेतु इच्छुक व्यवसायियों से सम्पर्क स्थापित करते हुये उन्हें विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में जागरूक करें। संयुक्त आयुक्त उद्योग द्वारा अवगत कराया गया कि मण्डल में एम0एस0एम0ई0 के तहत ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी हेतु 173 इकाईया तैयार है, जिनमें 1634 करोड़ निवेश की धनराशि होगी तथा इसके तहत लगभग 9737 लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने उपस्थित सभी उद्यमियों से एक-एक कर उनकी समस्याओं का जाना तथा सम्बंधित अधिकारियों को उद्यमियों की समस्याओं का निस्तारण करने के निर्देश दिये। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा-स्वारोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना की प्रगति की समीक्षा की गयी। बैठक का संचालन संयुक्त आयुक्त उद्योग श्रीमती सविता भारती रंजन द्वारा किया गया। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन श्री अनिरूद्व प्रताप सिंह, मण्डल के सभी उपायुक्त व उद्यमीगण एवं सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। अन्त में मण्डलायुक्त श्री गौरव दयाल की अध्यक्षता में उ0प्र0 मण्डलीय माइक्रो एण्ड स्माल इण्टरप्राइजेज, फैसिलिटेशन काउंसिल की बैठक हुई। बैठक में सुलह समझौते के आधार पर 02 वादों के सम्बंध में चर्चा की गयी तथा 05 वादों में आर्बीटेऊशन सम्बंधी बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की गयी और 04 निर्णित वादों में आर0सी0 जारी करने के सम्बंध में चर्चा की गयी। इस अवसर पर मण्डलीय माइक्रो एण्ड स्माल इंटरप्राइजेज, फैसिलिटेशन काउंसिल अयोध्या के सभी सदस्यगण सहित वादी प्रतिवादी उपस्थित रहे।

वरिष्ठ सपा नेता अनूप सिंह के डिग्री कालेज में हुई बूथ स्तर पर पदाधिकारियों की बैठक

संवाददाता

सोहावल अयोध्या। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखलेश यादव के करीबी राघवेन्द्र प्रताप सिंह अनूप के डेरामूसी स्थित डिग्री कालेज परिसर में बीकापुर विधान सभा क्षेत्र के बूथ स्तर पर पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित हुई । इस अवसर पर पूर्व सयुस जिलाध्यक्ष अनूप सिंह ने मौजूद सभी बूथ स्तरीय पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2027 में बीकापुर विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लडेंगे जिसकी बूथ स्तरीय तैयारी तेज कर दी गई है । उन्होंने कहा कि आप सभी लोग अभी से ही पूरी ताकत झोंक दीजिए जिससे कि वर्ष 2027 में सफलता मिल सके । उन्होंने सभी लोगो से कहा कि आप लोग जिनका जिनका नाम मतदाता सूची में नही जुड़ा हुआ है उसको जुड़वाने के लिए प्रक्रिया तेज कर दीजिए । इस अवसर पर प्रधान संघ जिलाध्यक्ष राजेश प्रताप सिंह महेंद्र प्रताप सिंह विजय प्रताप सिंह शेखर सिंह राकेश वर्मा दीदार अब्बास रानू सिंह बाबा राम दीन यादव दारा चौरसिया राज बब्बर यादव रवि वर्मा अमन प्रताप उर्फ गुड्डु अखिलेंद्र प्रताप सिंह राम सूरत यादव सुशील सिंह वेद प्रकाश चौरसिया राजेंद्र यादव अंसिका प्रसाद निषाद अश्वनी यादव राधेश्याम निषाद संतोष शर्मा अंगद सिंह अधिवक्ता सुधीर मिश्रा संचालन कर्ता अरशद आलम मोनू प्रदीप वर्मा सुलतान खान जलीस कुरैशी सोनू सिंह राम बचन बब्बन पांडेय अवधेश पांडेय छेदी वर्मा श्रीचंद्र वर्मा सतीश तिवारी अविनाश यादव नरेंद्र यादव नदीम भाई फरीद खां शीतला मिंटू सिंह सुशील सिंह साहबगंज आदि समेत काफी संख्या में लोगों की मौजूदगी रही ।

अयोध्या जिलाधिकारी नितीश कुमार ने अयोध्या के 52 और भवन स्वामियों को पेइंग गेस्ट पंजीकरण प्रमाण पत्र का किया वितरण

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या जिलाधिकारी नितीश कुमार ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में पेइंग गेस्ट योजना के अन्तर्गत आज 52 और भवन स्वामियों को पंजीकरण प्रमाण पत्र वितरित किया। उन्होंने बताया कि अब तक 500 से अधिक भवन स्वामियों को पेइंग गेस्ट योजना का प्रमाण पत्र प्रदान किया जा चुका है जिसे प्राण प्रतिष्ठा तक 1000 करने का लक्ष्य है। उन्होंने सभी भवन स्वामियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि आगामी दिनों में अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में तेजी से वृद्धि होगी, जिनमें से बड़ी संख्या में भक्त एवं श्रद्धालु रात्रि निवास भी करेंगे। इनके ठहरने के लिए बड़ी संख्या में होटल, गेस्ट हाउस/होम स्टे की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि इन होम स्टे से न केवल श्रद्धालुओं को घर जैसे माहौल में ठहरने का अनुभव होगा बल्कि स्थानीय निवासियों को अतिरिक्त आय भी प्राप्त हो सकेगी और पूरे अयोध्या क्षेत्र में रोजगार के अतिरिक्त अवसर भी सृजित होंगे तथा समावेशी विकास को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने पेइंग गेस्ट के तहत पूर्व में चयनित भवन स्वामियों से कहा कि श्रद्धालुओं को बेहतर से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करायें जिससे उन्हें घर जैसा माहौल लगे। उन्होंने कहा कि अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा अयोध्या के होम स्टे/पेइंग गेस्ट के स्वामियों एवं इसमें ठहरने वाले तीर्थ यात्रियों/श्रद्धालुओं के सहयोग हेतु एक यूजर फ्रेंडली मोबाइल एप ÷॥श्द्य4 ड्ड4श्स्रद्ध4ड्ड÷ विकसित किया गया है जिसके माध्यम से भी तीर्थ यात्री निर्बाध गति से अपने पसन्द के होम स्टे/पेइंग गेस्ट में बुकिंग कर सकते हैं इस पर श्रद्धालु अपने अनुभवों को साझा कर सकेंगे। इस अवसर पर पूर्व में प्रमाण पत्र प्राप्त कर चुके व पेइंग गेस्ट योजना के तहत कार्य कर रहे भवन स्वामियों द्वारा अपने अनुभवों को भी साझा किया गया। इस अवसर पर राज होम स्टे बड़ी देवकाली के मालिक अवनीश ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि यह बहुत ही अच्छी योजना है इससे हमें बुकिंग मिलनी प्रारंभ हो गई है हमारे द्वारा आगंतुकों के अच्छा व्यवहार किया जाता उन्हें अच्छी एवं गुणवत्ता युक्त सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती है जिसके परिणाम स्वरूप जो आगंतुक एक बार आते हैं वे पुनः आते हैं ही साथ ही अन्य लोगों को भी भेजते हैं। इस अवसर पर अन्य लोगों ने भी अपने अनुभवों को साझा किया। गौरतलब है कि अतिथि देवों भवः की भावना से प्रेरित होम स्टे/पेइंग गेस्ट योजना उ0प्र0 सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जो पर्यटन विभाग द्वारा संचालित की जा रही है। अयोध्या होम स्टे पेइंग गेस्ट योजना के तहत ऐसे भवन स्वामी जिनके मकान में 2 से 5 तक अतिरिक्त कमरे हो वो इस योजना से जुड़ कर अतिरिक्त आय सृजित कर लाभ उठा सकते है। उनके कमरों की सुविधा के अनुसार यात्री/श्रद्धालुओं के ठहरने पर प्रतिदिन प्रति कमरे 1500 से 2500 किराया प्राप्त होगा। अयोध्या के जो भी भवन स्वामी इस योजना का लाभ उठाना चाहते है वो अयोध्या विकास प्राधिकरण में स्थापित कन्ट्रोल रूम से सम्पर्क कर सकते है या मोबाइल नं0 7607778924, 7607778926 पर फोन करके योजना के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकतें है।

अब पेंड्रारोड स्टेशन से करगीरोड स्टेशन तक सभी स्टेशन पर रुकेगी बिलासपुर-रीवा एक्सप्रेस

संवाददाता

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)। इस क्षेत्र में बीते कई महीनों से ट्रेनों का स्टॉपेज अवरुद्ध है, इस कारण से क्षेत्रवासियों को बड़ी तकलीफ का सामना करना पड़ रहा था। इस बीच प्रबल प्रताप जूदेव ने रेलवे मंत्रालय से सम्पर्क कर जनहित में ट्रेन स्टॉपेज की मांग की जिसे स्वीकार कर लिया गया।

बिलासपुर जिले के कोटा विधानसभा सीट में जिले का सबसे दिलचस्प मुकाबला दिख रहा है। दूसरे चरण के चुनाव के अब कुछ ही दिन शेष बचे हैं, ऐसे में सभी प्रत्याशी अपना मास्टर स्ट्रोक खेलने में लग गए हैं। भाजपा के दिवंगत दिलीप सिंह जूदेव के बेटे और कोटा से बीजेपी प्रत्याशी प्रबल प्रताप जूदेव ने जनहित में क्षेत्रवासियों के लिए एक बड़ा प्रयास किया है। उनके प्रयास से अब बिलासपुर-रीवा एक्सप्रेस पेंड्रारोड स्टेशन से करगीरोड स्टेशन के बीच सभी स्टेशनों पर रुकेगी। बतौर प्रत्याशी यह उनका मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा है। दरअसल इस क्षेत्र में बीते कई महीनों से ट्रेनों का स्टॉपेज अवरुद्ध है, इस कारण से क्षेत्रवासियों को बड़ी तकलीफ का सामना करना पड़ रहा था। इस बीच प्रबल प्रताप जूदेव ने रेलवे मंत्रालय से सम्पर्क कर जनहित में ट्रेन स्टॉपेज की मांग की जिसे स्वीकार कर लिया गया। जानकारी के लिए बता दें कि पेंड्रारोड स्टेशन से करगीरोड कोटा स्टेशन तक कोटा विधानसभा का बड़ा हिस्सा आता है, लिहाजा बीजेपी प्रत्याशी के माध्यम से जनहित में किये गए इस पहल को राजनीतिक तौर पर एक बड़ा दांव माना जा रहा है। इस बीच बीजेपी प्रत्याशी ने बिलासपुर-रीवा एक्सप्रेस में यात्रा कर मतदाताओं से सीधे तौर कनेक्ट होने की कोशिश भी की है। आपको बता दें कि अब यह ट्रेन करगी रोड, सल्का रोड, बेलगहना, टेंगनमाड़ा, खोंगसरा, भनवारटंक, खोडरी,सारबहरा और पेण्ड्रा रोड में रुकेगी,जो कोटा विधानसभा क्षेत्र के अधिकांश हिस्से को टच करता है। कोटा विधानसभा इस बार त्रिकोणीय संघर्ष को झेल रहा है। यहां कांग्रेस से अटल श्रीवास्तव, भाजपा से प्रबल प्रताप जूदेव और जेसीसीजे से रेणु जोगी तीनों को टक्कर का प्रत्याशी माना जा रहा है। कोटा विधानसभा कांग्रेस की पारंपरिक सीट मानी जाती है, इस मिथक को पिछले चुनाव में रेणु जोगी ने तोड़ दिया था और कांग्रेस बीजेपी से भी पिछड़कर तीसरे स्थान पर पहुंच गई थी।

हाईकोर्ट में केबिनेट बेबीरानी मौर्य तलब

एडीए नगर निगम और पुलिस कमिश्नर को बनाया पार्टी

❖ जगदीश पुरा जमीनी प्रकरण को लेकर एडवोकेट सोनी ने खटखटाया दरवाजा।

संवाददाता

आगरा। यूपी सरकार की केबिनेट मंत्री को जगदीशपुरा में अपने भतीजे की जमीन विवाद में सहयोग करना भारी पड़ गया। एडवोकेट सुरेश चंद सोनी ने पहले दीवानी से मुकदमा लिखवाया उसके बाद हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर मंत्री, उनके पुत्र, भतीजे, विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष, नगर आयुक्त को तलब करा लिया है जिससे हड़कंप मच गया है। बताते हैं कि जगदीशपुरा में जमीन को लेकर एडवोकेट सोनी और यूपी सरकार की केबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य के भतीजे के बीच विवाद चल रहा है। इस मामले में मंत्री के कहने पर विकास प्राधिकरण और नगर निगम के अधिकारियो ने कार्यवाही के लिए टीम भेजकर कार्यवाही शुरू कराई थी। इस दौरान मंत्री के कहने पर पुलिस ने भी कार्यवाही की थी। इससे क्षुब्ध एडवोकेट सोनी ने पहले दीवानी न्यायालय की शरण लेकर यूपी सरकार की पुष्टहार मंत्री बेबीरानी मौर्य सहित भाई भतीजे सहित आधा दर्जन लोगो के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसको थाना जगदीशपुरा पुलिस ने विवेचना के दौरान एक्सपंज कर दिया। इसके बाद एडवोकेट सोनी के द्वारा अवेध कब्जा करने का आरोप लगाकर विकास प्राधिकरण और नगर निगम की टीम जांच करने पहुंच गई जहां इससे क्षुब्ध एडवोकेट सोनी ने हाईकोर्ट की शरण ली। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने याचिका पर यूपी सरकार की केबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य, उनके पुत्र अभिनय मौर्य, पति प्रदीप मौर्य, भतीजे, भाई, आगरा विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष, नगर निगम के नगर आयुक्त और पुलिस कमिश्नर को नोटिस भेजकर तलब किया है। हाईकोर्ट में दायर याचिका में कहा गया है कि उन्होंने विकास प्राधिकरण से मानचित्र पास कराने के बाद विल्डिंग बनाई है। इस बिल्डिंग पर यूपी सरकार की केबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य के भतीजे , भाई और रिश्तेदार अवेध रूप से कब्जा करना चाहते हैं स्थानीय प्रशासन केवीनेट मंत्री के दबाव में आकर उनके खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। बताया गया है कि जिस संपति को लेकर विवाद है वह संपति करोड़ो रुपए कीमती है।इधर जगदीशपुरा संपति विवाद हाईकोर्ट में पहुंचने के बाद तलब हुए अधिकारी जवाब दाखिल करने की तैयारी में जुट गए हैं। विकास प्राधिकरण अधिकारियो ने रिकार्ट खंगाले गए उनके अनुसार एडवोकेट सुरेश चंद सोनी और यूपी केबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य के भाई भतीजे के बीच जिस संपति का विवाद है उसका नकसा पास नही है।

एक नज़र

चुनाव ड्यूटी के दौरान अधिकारी की मौत, अचानक तबीयत बिगड़ने पर खुद निकले अस्पताल

शहडोल। शहडोल में विधानसभा चुनाव के दौरान ड्यूटी करते हुए एक अधिकारी की मौत हो गई है। बराक्ष हायर सेकंडरी स्कूल के प्रभारी प्राचार्य रावेंद्र प्रसाद गर्ग की ड्यूटी पीठासीन अधिकारी के तौर पर जयसिंहनगर विधानसभा में लगाई गई थी। निर्वाचन आयोग द्वारा उन्हें रिजर्व कोटे के लिए शहडोल मुख्यालय में ही पदस्थ किया था। पीठासीन अधिकारी रावेंद्र प्रसाद गर्ग शहडोल मुख्यालय में निर्वाचन का काम कर रहे थे। तभी 17 नवंबर की शाम को कार्य के दौरान ही अचानक उनकी तबियत बिगड़ने लगी। अपनी तबियत बिगड़ते देख पीठासीन अधिकारी रावेंद्र प्रसाद गर्ग खुद ही अस्पताल के लिए रवाना हो गए।

अस्पताल पहुंचते ही हो गई मौत

पीठासीन अधिकारी ब्यौहारी के नजदीक बरकछ गांव के रहने वाले थे। इस कारण उनका इलाज पहले से ही ब्यौहारी में चलता था। शहडोल में जैसे ही उनकी तबियत बिगड़ी वो खुद ही ब्यौहारी के लिए रवाना हो गए। गर्ग जैसे ही ब्यौहारी के सिविल अस्पताल पहुंचे वहां उपचार के दौरान मौत हो गई।

डॉक्टर्स ने कराया शव का पीएम

ब्यौहारी के सिविल अस्पताल में पीठासीन अधिकारी की मौत के बाद प्रशासन के निर्देश पर डॉक्टर्स की टीम ने 18 नवंबर की सुबह शव का पीएम कराया है। बताया जा रहा है कि पीठासीन अधिकारी रावेंद्र प्रसाद गर्ग की मौत संभवतः अचानक हार्ट अटैक के आने से हुई है।

अपनी विदाई और हार की समीक्षा कर रही कांग्रेस:बृजमोहन

भूपेश को आभास हो गया है कि वो जाने वाले हैं: बृजमोहन

रायपुर। विधानसभा चुनाव के बाद छत्तीसगढ़ में अब दावों और कयासों का दौर चल रहा है। हार, जीत को लेकर बयानबाजी की जा रही है। बीजेपी और कांग्रेस अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं। इसी क्रम में रायपुर दक्षिण से बीजेपी प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने कांग्रेस और सीएम भूपेश बघेल पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपनी हार की समीक्षा कर रही है। क्योंकि उसे इस बात का आभास हो गया है कि उनकी विदाई जनता ने तय कर दी है। जनता बीजेपी के स्वागत के लिए तैयार है, इसलिए कांग्रेस अपनी विदाई और हार की समीक्षा कर रही है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को आभास हो गया है कि वह जाने वाले हैं। उन्होंने कहा कि मैं 19 नवंबर को महादेव घाट में छठ कार्यक्रम में था। इस दौरान सीएम भूपेश बघेल की बॉडी लैंग्वेज और उनका दबा हुआ बोल इस बात को स्पष्ट करता है कि उन्हें आभास हो गया है कि वह जाने वाले हैं और बीजेपी सरकार आने वाली है। अग्रवाल ने दावा करते हुए कहा कि भाजपा बहुमत से आएगी और प्रदेश में सरकार बनाएगी। कांग्रेस में सीएम को लेकर घमासान मचा हुआ है। कांग्रेस में पहले मुख्यमंत्री के चार दावेदार थे, अब पांच हो गए हैं। कांग्रेस की ओर से छत्तीसगढ़ महतारी की आस्था पर कहा कि छत्तीसगढ़ महतारी कोई नई बात नहीं है। हम पिछले 40 साल से छत्तीसगढ़ महतारी की जयकारे लगा रहे हैं। कांग्रेस केवल राजनीति के लिए छत्तीसगढ़ महतारी का उपयोग करती है।

देश की पहली किन्नर पूर्व विधायक के खिलाफ फिर FIR दर्ज

संवाददाता

शहडोल/अनूपपुर। मध्यप्रदेश में अनूपपुर जिले की पहली किन्नर विधायक के खिलाफ कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज किया है। बताया जा रहा है कि आचार संहिता के दौरान पूर्व विधायक ने अपनी पिस्टल को थाने में जमा नहीं किया था।

देश की पहली किन्नर विधायक शबनम मौसी के खिलाफ अनूपपुर की कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज किया है। शबनम मौसी ने आचार संहिता के दौरान अपनी पिस्टल को थाने में जमा नहीं किया था, जिसके कारण पुलिस ने धारा-188 एवं 29, 30 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। अभी हाल में ही दो ऑटो चालकों से बीच चौराहे पर मारपीट करने पर भी मामला दर्ज हुआ था। बता दें कि मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर पूरे प्रदेश में आचार संहिता लगने के बाद अनूपपुर पुलिस ने शस्त्रधारियों को अपने-अपने शस्त्र जमा करने के लिए नोटिस जारी किया था। उसके बाद सभी शस्त्रधारियों ने अपने-अपने शस्त्र नजदीकी थानों में जमा कर दिए थे। वहीं, शबनम मौसी पूर्व विधायक जिनके पास शस्त्र के रूप में पिस्टल था। पिस्टल को जमा करने के लिए नोटिस दिया गया था। यह नोटिस कई बार दी जा चुकी थी। इसके बावजूद उन्होंने लापरवाही बरतते हुए जमा नहीं कराया, जिसको लेकर थाना कोतवाली अनूपपुर में शबनम मौसी के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। वहीं, इस पूरे मामले में अनूपपुर एसपी जितेन्द्र पवार का कहना है कि चुनाव के दौरान आचार संहिता में नोटिस जारी होने के बाबजूद उन्होंने अपना शस्त्र जमा नहीं किया था। इस पर उनके खिलाफ मामला दर्ज हुआ है।

साइकिल से घर लौट रहे युवक को कार ने कुचला

संवाददाता

शहडोल। शहडोल में एक कार की टक्कर से साइकिल सवार युवक की मौत हो गई। उसका शव काफी देर तक सड़क पर पड़ा रहा। पुलिस कार चालक की तलाश कर रही है।

मध्यप्रदेश के शहडोल में सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। साइकिल से घर जा रहे युवक को कार ने रौंद दिया। रास्ते पर खून से लथपथ शव देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस कार की तलाश कर रही है। जानकारी के मुताबिक हादसा शहडोल जिले के केशवाही क्षेत्र में हुआ। बताया जा रहा है कि केशवाही क्षेत्र के संकरा पुलिया के पास अज्ञात कार ने साइकिल सवार सीताशरण गोड (35) को कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। चौकी प्रभारी आशीष झारिया ने बताया कि बीती रात सीताशरण अपने खेत से घर लौट रहा था। तभी रास्ते में संकरा पुलिया के पास तेज व लापरवाहीपूर्वक कार चलते हुए चालक ने उनकी साइकिल को टक्कर मार दी। हादसे में उसकी मौके पर ही मौत हो गई है। जब स्थानीय लोग वहां से गुजरे तो देखा कि खून से लथपथ एक शव पुलिया के समीप पड़ा हुआ है। घटना की जानकारी तत्काल पुलिस को दी गई। सूचना लगते ही पहुंची पुलिस ने मामले पर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। चौकी प्रभारी का कहना है कि अज्ञात कार की तलाश की जा रही है।

देवरी रोड पर सजेगी भीम नगरी

❖ केंद्रीय कमेटी का फैसला, तीन दर्जन वस्तियो के विकास कार्यो को सूची तैयार।

संवाददाता

आगरा। उत्तर भारत की ऐतिहासिक भीम नगरी का आयोजन देवरी रोड स्थित नंद पुरा मे किया जाएगा। इस क्षेत्र की तीन दर्जन दलित बस्तियों में निमार्ण कार्य कराने के लिए सूची दिसंबर माह में ही जिला प्रशासन को सौप दी जाएगी। भीम नगरी केंद्रीय कमेटी की बैठक करतार सिंह भारतीय एड की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में पूर्व मंत्री एब छावनी क्षेत्र के भाजपा विधायक डा जी एस धर्मेश, आजाद समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील चितौड़ बसपा के डा मलखान सिंह,अध्यक्ष मुकेश कल्याण,धर्मेंद्र सोनी, संजय सिंह, ऋषि कुमार सहित केंद्रीय और क्षेत्रीय समिति के पदाधिकारी मौजूद थे। बैठक में तय किया गया कि दिसंबर माह में बाबा साहब अम्बेडकर जयंती पर निकलने वाली शोभायात्रा मार्गो और भीम नगरी सजने वाले क्षेत्र के तीन दर्जन दलित बस्तियों में निमार्ण कार्य कराने की सूची सौंपी जाएगी जिससे विकास कार्य समय पर पूरे हो सके। भारतीय ने बताया कि इस बार अंवेदकर जयंती ताज नगरी में चालीस किलो मीटर भ्रमण करते हैं भीम नगरी पहुचेगी जहा सामूहिक विवाह समारोह, वृद्ध जन सम्मान समारोह व दलित समाज के मेधावी छात्र छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा। इसके अलावा अन्य कार्यक्रम आयोजित भी होगे। बैठक में तय किया गया है कि इस बार भीम नगरी का शुभारंभ राष्ट्पति से कराने की जिम्मेदारी भाजपा विधायक डा जी एस धर्मेश को सौंपी गई है।

विकास परिषद के आवासीय क्षेत्रों में बनाई जा रही कामर्शियल बिल्डिंग

विभागीय अधिकारियों की सांठ गांठ से बनाने लगी बहु मंजिला भवन

संवाददाता

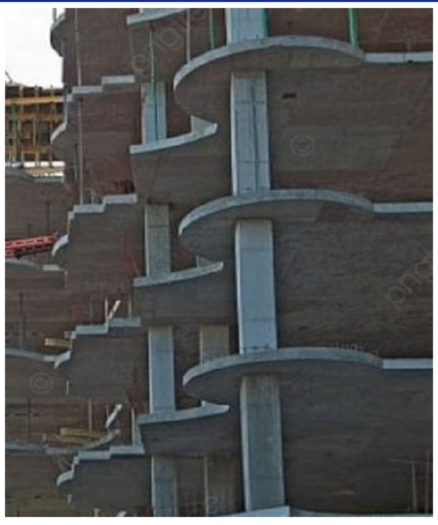

आगरा। विकास परिषद ने सिकंदरा क्षेत्र में आवासीय भवन बनाए थे। इस क्षेत्र के अंतर्गत कई सेक्टरों में आवंटित भवन को तोड़ कर जहां कोमार्सियल भवनों के साथ बहुमंजिला इमारत बनाई जा रही है लेकिन विभागीय अधिकारी इस तरफ मूक दर्शक बने हुए हैं दूसरी तरफ इन भवनों के स्वामियों पर क्षेत्रीय इंजीनियर महरवान हैं। विकास परिषद ने सिकंदरा योजना के तहत कारगिल पेट्रोल पंप के पास आवासीय भवन बनाकर आवंटित किए थे। सिकंदरा क्षेत्र की इस कॉलोनी में आवंटन के समय और न वर्तमान में कोमार्सियक क्षेत्र घोषित किया था। लेकिन इस क्षेत्र में सड़क के किनारे बने भवनों को तोड़ तोड़ कर जहा पहले बेस मेंट्ट फिर वहुमाजिला इमारत खड़ी की जा रही है। बताते हैं कि आवास विकास परिषद क्षेत्र में घडले से बन रही बहुमंजिला इमारतों के मानचित्र भी पास नहीं है इतना ही नहीं इन क्षेत्रों में न विकास प्राधिकरण हस्तेक्षप कर पा रहा है और विकास प्राधिकरण के अधिकारी भी चुप्पी साधे बैठे हुए हैं।

साव जीते तो बन सकते हैं सीएम

लोरमी में त्रिकोणीय चक्रव्यूह में फंसे बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष साव

संवाददाता

बिलासपुर-छत्तीसगढ़। वधानसभा चुनाव 2023 में इस बार लोरमी सीट हाई प्रोफाइल वीआईपी सीट बन गई है। इस बार इस सीट पर भाजपा प्रत्याशी अरुण साव के सामने कांग्रेस प्रत्याशी थानेश्वर साहू हैं।

विधानसभा चुनाव 2023 में इस बार लोरमी सीट हाई प्रोफाइल वीआईपी सीट बन गई है। इस बार इस सीट पर भाजपा प्रत्याशी अरुण साव के सामने कांग्रेस प्रत्याशी थानेश्वर साहू हैं। वर्तमान में अरुण साव बिलासपुर सांसद और बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हैं। इस वजह से ये सीट हाई प्रोफाइल हो चुकी है। पूरे प्रदेश की निगाहें इस सीट पर टिकी हुई है। क्योंकि सियासी गलियारे में इस बात की चर्चा है कि बीजेपी में ओबीसी वर्ग से अरुण साव सीएम पद के प्रबल दावेदार हो सकते हैं। जिस प्रकार से प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी संभालने के बाद उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। पूर्व सीएम रमन सिंह के बाद बीजेपी के सभी पोस्टर्स-बैनर में उनकी तस्वीरें प्रमुखता से दिख रही हैं। पीएम नरेंद्र मोदी की रायगढ़ जिले के कोड़ातराई समेत कई सभाओं में वो पीएम के साथ रथ पर सवार दिखे, जबकि रमन सिंह मंच पर ही चुपचाप बैठे नजर आए। इसलिए लोरमी से साव की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है। वहीं थानेश्वर साहू सामाजिक वोटों के सहारे अपनी नैया पार करने की जुगत में लगे हुए हैं, जबकि सागर सिंह बैस के सामने अपने आप को साबित करने की चुनौती है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद साव छत्तीसगढ़ की राजनीति में तेजी से उभरे हैं। कांग्रेस ने साव को कड़ी टक्कर देने के लिए उन्हीं के समाज (ओबीसी) से छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष और साहू समाज के प्रदेश अध्यक्ष रह चुके थानेश्वर साहू को प्रत्याशी बनाया है। वहीं यहां पर चुनाव त्रिकोणीय होते दिख रहा है। जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ जोगी (जेसीसीजे) ने सागर सिंह बैस को चुनाव मैदान में उतारा है और वो पूरी ताकत के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। इस बार के चुनाव में कांग्रेस ने उन्हें टिकट नहीं दी, तो उन्होंने पार्टी छोड़कर जेसीसीजे का दामन थाम लिया।

समाज के वोटों का ध्रुवीकरण

अरुण साव ओबीसी वर्ग के साहू समाज से हैं। फिलहाल बीजेपी में ओबीसी वर्ग से कोई बड़ा कद का दिग्गज नेता नहीं है। ऐसे में यदि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनती है तो वे सीएम पद के प्रबल दावेदार माने जा रहे हैं। क्योंकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग के बहुल्य वाले क्षेत्र में जातिगत वोट काफी मायने रखते हैं। लोरमी विधानसभा में साहू समाज के वोटर्स की संख्या ज्यादा है। इसलिए बीजेपी ने वर्ष 1993 से लेकर अब तक यानी 2023 तक लगातार सात बार इसी समाज से प्रत्याशी को चुनाव मैदान में उतारा है। बीजेपी की इस रणनीति को देखें तो सिर्फ दो प्रत्याशी मुनीराम साहू और तोखन साहू एक-एक बार छत्तीसगढ़ विधानसभा के दर पर पहुंचने में कामयाब हुए हैं। दूसरी ओर सामान्य वर्ग से धरमजीत सिंह तीन बार कांग्रेस से और एक बार जेसीसीजे के टिकट पर चुनाव जीत चुके हैं। वर्तमान में वो लोरमी से जेसीसीजे के विधायक हैं। फिलहाल वो बीजेपी में हैं।

विधानसभा चुनाव 2018 का परिणाम

विधानसभा चुनाव 2018 की बात करें, तो लोरमी में जेसीसीजे और भाजपा के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला था। बीजेपी ने लोरमी सीट पर जहां तोखन साहू को सियासी मैदान में उतारा था, तो वहीं जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ जोगी (जेसीसीजे) की ओर से धरमजीत सिंह चुनाव मैदान में थे। धरमजीत सिंह को 67 हजार से अधिक वोटों से जीत मिली थी। वहीं भाजपा प्रत्याशी तोखन साहू को सिर्फ 42 हजार से अधिक वोटों से संतोष करना पड़ा था और उनकी हार हुई थी।

जातीय समीकरण

लोरमी में अनुसूचित जाति के वोटर्स की संख्या करीब 52 हजार है। साहू समाज के मतदाताओं की संख्या करीब 45 हजार है। कुर्मी समाज के भी मतदाता बड़ी संख्या में हैं। एसटी वर्ग के करीब 18 हजार मतदाता हैं। वहीं सामान्य वर्ग के करीब 45 हजार मतदाता हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि सामाजिक वोटों के ध्रुवीकरण से प्रत्याशी बाजी मार सकते हैं। लोरमी के सियासत में इस बात की चर्चा है कि जो प्रत्याशी ओबीसी वर्ग के साथ ही सतनामी समाज का वोट हासिल करेगा, वही चुनाव में बाजी मारेगा।

लोरमी सीट का इतिहास

कांग्रेस के टिकट पर साल 2003 में धरमजीत सिंह जीते

कांग्रेस के टिकट पर साल 2008 धर्मजीत सिंह दोबारा विधायक बने

साल 2013 में बीजेपी के तोखन साहू ने बाजी मारी और विधायक बने

तीसरी बार जेसीसीजे के टिकट पर वर्ष 2018 में धर्मजीत सिंह जीते और विधायक बने

स्थानीय मुद्दे

स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, सिंचाई, कृषि, रोजगार, ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं का आभाव।

अब गेंदबाजों के लिए भी टाइम आउट जैसा नियम

एजेंसी

नई दिल्ली। आईसीसी ने साफ किया है कि यदि एक ओवर खत्म होने के बाद दूसरा ओवर शुरू होने में एक मिनट से ज्यादा का समय लगता है और ऐसा तीन बार होता है तो गेंदबाजी टीम पर जुर्माना लगाया जाएगा। वनडे विश्व कप 2023 के बाद आईसीसी ने क्रिकेट के नियमों में बदलाव किया है। यह बदलाव खेल की गति में तेजी लाने के लिए किया गया है। आईसीसी ने गेंदबाजों के लिए भी टाइम आउट जैसा नियम बनाया है। क्रिकेट की संचालन संस्था आईसीसी ने मंगलवार को कहा कि अगर गेंदबाज एक पारी में तीसरी बार नया ओवर शुरू करने में 60 सेकंड से ज्यादा समय लेता है तो गेंदबाजी करने वाली टीम पर पांच

रन की पेनल्टी लगाई जाएगी। यह नियम फिलहाल पुरुष क्रिकेट में वनडे और टी20 फॉर्मेट में लागू होगा। शुरुआत में यह नियम ट्रायल के लिए लागू किया जाएगा और आगे इसकी उपयोगिता और प्रभाव को देखते हुए इसे स्थायी तौर पर लागू किया जा सकता है। यह फैसला यहां अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) बोर्ड की बैठक में लिया गया। सीईसी ने दिसंबर 2023 से अप्रैल 2024 तक पुरुषों के वनडे और टी20 क्रिकेट में परीक्षण के आधार पर स्टॉप क्लॉक पेश करने पर सहमति व्यक्त की। इस घड़ी का उपयोग ओवरों के बीच लगने वाले समय को कम करने के लिए किया जाएगा। आईसीसी ने एक बयान में कहा, अगर गेंदबाजी करने वाली टीम पिछले ओवर के पूरा होने के 60 सेकंड के भीतर अगला ओवर फेंकने के लिए तैयार नहीं होती है, तो एक पारी में तीसरी बार ऐसा होने पर पांच रन का जुर्माना लगाया जाएगा।

आईसीसी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पिच पर प्रतिबंध लगाने की अपनी प्रक्रिया में भी बदलाव किया। आईसीसी की तरफ से आगे कहा गया ÷पिच और आउटफील्ड निगरानी नियमों में बदलावों को भी मंजूरी दे दी गई है, जिसमें उन मानदंडों का सरल किया गया है जिनके आधार पर पिच का मूल्यांकन किया जाता है। इसके साथ ही पहले नियम था कि पांच साल के अंदर अगर किसी मैदान की पिच को पांच डिमेरिट अंक दिए जाते हैं तो उस पर बैन लग जाता है। अब इसकी सीमा बढ़ाकर छह डिमेरिट अंक कर दी गई है। अब किसी मैदान की पिच को पांच साल में छह डिमेरिट अंक दिए जाने पर उस मैदान पर बैन लगाया जाएगा।

क्या है टाइम आउट नियम?

आईसीसी के नियम 40.1.1 के अनुसार बल्लेबाज के आउट होने या रिटायर होने के अगले दो मिनट के अंदर अगले बल्लेबाज को गेंद खेलने के लिए तैयार होना चाहिए। अगर इसे पूरा नहीं किया जाता है तो यह टाइम्ड आउट के दायरे में आता है। हालांकि मेरलिबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) के नियमों के तहत टाइम्ड आउट के लिए समय तीन मिनट है, लेकिन विश्वकप में आईसीसी नियमों के तहत इसके लिए दो मिनट रखे गए हैं। टाइम्ड आउट का का विकेट किसी गेंदबाज के खाते में नहीं जाता है और न ही इसके लिए अतिरिक्त गेंद जोड़ी जाती है। आईसीसी की इसी बैठक में यह भी तय किया गया कि श्रीलंका की क्रिकेट टीम बोर्ड के निलंबन के बावजूद अंतरराष्ट्रीय मैच खेल सकती है। हालांकि, अंडर-19 विश्व कप 2024 की मेजबानी श्रीलंका से छीनकर दक्षिण अफ्रीका को दे दी गई। वहीं, यह भी तय किया गया कि अगर कोई खिलाड़ी पुरुष के रूप में बड़ा हुआ है और किशोरावस्था में उसके शरीर में होने वाले बदलाव लड़कों के समान थे तो वह लिंग परिवर्तन कराने पर भी महिला क्रिकेट में खेलने के योग्य नहीं होगा।

टीम में नहीं चुने जाने पर भी चहल की मुस्कान बरकार

एजेंसी

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टी20 मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम का एलान हो चुका है। सीनियर खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाया गया है। टी20 सीरीज की शुरुआत 23 नवंबर को विशाखापट्टनम में होगी। विश्व कप टीम में शामिल चार खिलाड़ियों को चुना गया है। इनमें से श्रेयस अय्यर आखिरी दो मैचों के लिए टीम के साथ जुड़ेंगे। सूर्यकुमार के अलावा ईशान किशन और प्रसिद्ध कृष्णा को जगह मिली है। वहीं, अनुभवी लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल और विकेटकीप-बल्लेबाज संजू सैमसन को नजरअंदाज किया गया है। भारत के लिए 80 टी20 खेलने वाले चहल ने टीम में नहीं चुने जाने पर सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया दी। सिलेक्शन नहीं होने पर उनके चेहरे पर मुस्कान बरकरार है। उन्होंने अपनी पोस्ट में कुछ नहीं लिखा। चहल ने सिर्फ एक मुस्कान वाली इमोजी शेयर की। इसे देखकर फैंस भावुक हो गए। उन्होंने कमेंट में चहल का समर्थन किया। 80 टी20 मुकाबलों में इस स्पिनर ने 96 विकेट लिए हैं।

सैमसन ने पिछले मुकाबले में बनाए थे 40 रन

दूसरी ओर, 24 टी20 खेलने वाले संजू को भी बाहर रखा गया है। उन्होंने इस फॉर्मेट में देश के लिए 19.68 की औसत और 133.57 की स्ट्राइक रेट से 374 रन बनाए। इस दौरान सैमसन का उच्चतम स्कोर 77 रन है। संजू ने पिछले पांच टी20 में तीन बार बल्लेबाजी की।

आईसीसी ने श्रीलंका से छीनी अंडर-19 विश्व कप की मेजबानी अब दक्षिण अफ्रीका में होगा टूर्नामेंट

एजेंसी

नई दिल्ली। श्रीलंका क्रिकेट में प्रशासनिक अनिश्चितता को देखते हुए आईसीसी बोर्ड ने यह फैसला लिया है। अहमदाबाद में हुई बैठक में इस बारे में फैसला लिया गया। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड के खिलाफ आईसीसी ने एक बड़ा एक्शन लिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आगामी अंडर-10 विश्व कप की मेजबानी उससे वापस ले ली है। 10 नवंबर को आईसीसी ने श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड पर प्रतिबंध लगा दिया था। अब अंडर-19 विश्व कप की मेजबानी दक्षिण अफ्रीका को सौंप दी है। श्रीलंका क्रिकेट में प्रशासनिक अनिश्चितता को देखते हुए आईसीसी बोर्ड ने यह फैसला लिया है। अहमदाबाद में हुई बैठक में इस बारे में फैसला लिया गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, काफी विचार-विमर्श के बाद आईसीसी ने श्रीलंका क्रिकेट को निलंबित करने के निर्णय को बरकरार

रखने का फैसला किया है। बोर्ड ने कहा कि श्रीलंका टीम से जुड़ा क्रिकेट निर्बाध रूप से जारी रहेगा, लेकिन निलंबन को रद्द नहीं किया जाएगा।

तारीखों में नहीं हुआ बदलाव

अंडर-19 विश्व कप का आयोजन श्रीलंका में 14 जनवरी से 15 फरवरी के बीच होने वाला था। आईसीसी ने दक्षिण अफ्रीका को मेजबानी तो सौंपी है, लेकिन उसने तारीखों में बदलाव नहीं किया है। दक्षिण अफ्रीका में 10 जनवरी से 10 फरवरी एसए टी20 (ङ्म20) टूर्नामेंट का आयोजन भी होना है।

ओमान और यूएई के नाम पर हुआ विचार

आईसीसी ने नए मेजबान के लिए ओमान और यूएई के नाम पर भी विचार किया, लेकिन बेहतर बुनियादी ढांचे के कारण दक्षिण अफ्रीका को मेजबानी सौंपी। टूर्नामेंट के लिए कम से कम तीन मैदानों की आवश्यकता होती है, लेकिन ओमान के पास एक ही है। वहीं, यूएई में टूर्नामेंट का आयोजन कर काफी महंगा होता। इस कारण आईसीसी ने अफ्रीकी देश को चुना।

श्रीलंका से पहले जिम्बाब्वे पर भी लगा था प्रतिबंध

जिम्बाब्वे क्रिकेट को 2019 में सरकारी हस्तक्षेप के कारण निलंबित किए जाने के बाद पिछले चार वर्षों में एसएलसी आईसीसी द्वारा निलंबित किया जाने वाला दूसरा पूर्ण सदस्य है। हालांकि, जिम्बाब्वे में सभी क्रिकेट गतिविधियों को अचानक बंद कर दिया गया था। इसके अलावा फंडिंग पर भी रोक लगा दी गई थी। बाद में जिम्बाब्वे क्रिकेट को बहाल कर दिया गया था। आईसीसी श्रीलंका के मामले में सावधानी से कदम उठाएगी।

ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले उमर गुल बने पाकिस्तान के तेज गेंदबाजी कोच सईद अजमल को मिली स्पिन की जिम्मेदारी

एजेंसी

नई दिल्ली। उमर गुल और सईद अजमल 2009 में टी20 विश्व कप जीतने वाली पाकिस्तानी टीम के सदस्य हैं। गुल तेज गेंदबाजी कोच के रूप में दक्षिण अफ्रीका के मोर्ने मोर्कल की जगह लेंगे। वह अजमल के साथ मिलकर ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले टीम के साथ काम शुरू कर देंगे।

पाकिस्तान क्रिकेट इन दिनों बदलाव के दौर से गुजर रहा है। विश्व कप में टीम के शर्मनाक प्रदर्शन के बाद कोच से लेकर कप्तान तक बदल दिए गए हैं। इसी क्रम में अब नए तेज गेंदबाजी और नए स्पिन गेंदबाजी कोच का एलान हुआ है। पीसीबी ने पूर्व खिलाड़ी उमर गुल और सईद अजमल को बड़ी जिम्मेदारी दी है। गुल को तेज गेंदबाजी कोच और अजमल को स्पिन गेंदबाजी कोच बनाया गया है। हाल ही में शान मसूद को टेस्ट और शाहीन अफरीदी को

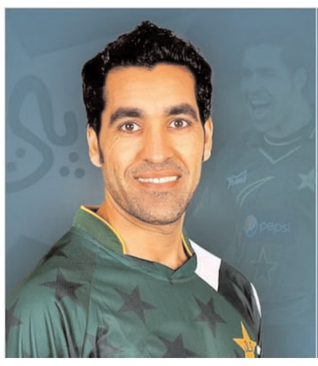

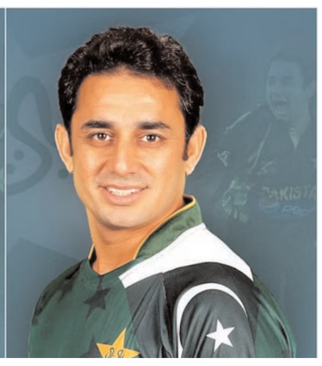

टी20 का कप्तान बनाया गया था। पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद हफीज क्रिकेट डायरेक्टर और वहाब रियाज मुख्य चयनकर्ता बने हैं। उमर गुल और सईद अजमल 2009 में टी20 विश्व कप जीतने वाली पाकिस्तानी टीम के सदस्य हैं। गुल तेज गेंदबाजी कोच के रूप में दक्षिण अफ्रीका के मोर्ने मोर्कल की जगह लेंगे। वह अजमल के साथ मिलकर ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले टीम के साथ काम शुरू कर देंगे। पाकिस्तान को ऑस्ट्रेलिया में 14 दिसंबर से सात जनवरी के बीच तीन टेस्ट मैच खेलने हैं। उसके बाद 12 से 21 जनवरी तक न्यूजीलैंड में टी20 सीरीज में हिस्सा लेना है।

गुल ने 2016 में खेला था आखिरी मैच

उमर गुल से इससे पहले पाकिस्तान की टीम के साथ काम कर चुके हैं। वह अफगानिस्तान के खिलाफ तीन टी20 मैचों की सीरीज और न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज के दौरान टीम के गेंदबाजी कोच थे। गुल पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) में क्वेटा ग्लेडिएटर्स के गेंदबाजी कोच रह चुके हैं। इसके अलावा वह 2022 टी20 विश्व कप के दौरान अफगानिस्तान के गेंदबाजी कोच थे। गुल ने 2003 में पाकिस्तान के लिए पहला अंतरराष्ट्रीय मैच खेला था। उन्होंने 47 टेस्ट, 130 वनडे और 60 टी20 मैचों में हिस्सा लिया। गुल ने टेस्ट में 163, वनडे में 179 और टी20 में 85 विकेट लिए हैं। उन्होंने 2016 में अपना आखिरी मैच खेला था।

अजमल ने पाकिस्तान के लिए 447 विकेट लिए

सईद अजमल की बात करें तो वह वनडे में नंबर-1 गेंदबाज रह चुके हैं। उन्होंने 2008 में उन्होंने पहला अंतरराष्ट्रीय मैच खेला था। पाकिस्तान के लिए 35 टेस्ट, 113 वनडे और 64 टी20 मैचों में अजमल ने कुल 447 विकेट लिए। वह पीएसएल में इस्लामाबाद यूनाइटेड के स्पिन गेंदबाजी कोच रह चुके हैं।

नेचर लवर हैं तो घूमने के लिए जरूर जाएं 'पोखरा'

ट्रैवलिंग के शौकीन लोगों को ज्यादातर पहाड़, वॉटरफॉल और खूबसूरत झीलें देखना बहुत पसंद होता है। आज हम आपको ऐसे एक शहर के बारे में बताने जा रहे है, जिसे 'झीलों की नगरी' कहा जाता है। हम बात कर रहे हैं प्राकृतिक नजारों से भरपूर नेपाल के 'पोखरा' वैली की, जहां आप अपने परिवार के साथ पूरी एंजॉय कर सकते है। झीलों और वॉटरफॉल के साथ-साथ आप यहां के खूबसूरती गांव भी देख सकते हैं।

बेगनस झील: नेपाल की तीसरी और पोखरा की दूसरी सबसे बड़ी बेगनास लेक का साफ पानी और शांत वातावरण को टूरिस्ट को अपनी तरफ खींचता है। इतना ही नहीं, इस झील के आस-पास कऊी रिजॉर्ट्स भी बने हैं, जहां आप अपने पार्टनर के साथ रोमांटिक टाइम स्पेंड कर सकते हैं।

डेवी वॉटरफॉल: पोखरा के इस वॉटरफॉल को काफी रहस्यमी माना जाता है। दरअसल, इस झरनें का पानी किसी नदी या लैगून में नहीं बल्कि वह गुफाओं से गुजरने से पहले एक डार्क होल में गिरता है, जिसके कारण इसे रहस्यमी माना जाता है। यही वजह है कि टूरिस्ट भी इस झरनें की तरफ खींचे चले आते हैं।

फेवा झील: पोखरा की सबसे फेमस फेवा झील में आप बोटिंग का मजा भी ले सकते हैं। बोटिंग करने के साथ आप खूबसूरत पहाड़ों को देख सकते हैं। खास बात तो यह है कि इस झील का पानी कांच की तरह बिल्कुल साफ है।

सारंगकोट: नदी किनारे बसे इस चोटे से पहाड़ी गांव में आप हर तरह फैली अद्भुत प्राकृति का मजा ले सकते हैं। इसके अलावा यहां की वाइल्डलाइफ भी काफी मशहूर है। यहां आपको प्रकृति के अलग-अलग रंग देखने को मिलते हैं।

पोखरा शांति स्तूप: 'पोखरा शांति स्तूप' पेहवा के ऊपर एक संकरी चोटी के ऊपर गिरा हुआ चमचमाता सफेद विश्व शांति शिवालय है। इस स्तूप तक पहुंचने के तीन अलग-अलग रास्ते हैं, नांव, जंगल सैर और लंबी पैदल यात्रा। हालांकि लोग नांव के जरिए यहां जाना पसंद करते हैं क्योंकि नदी के रास्ते में पोखरा घाटी के शानदार नजारे देखने को मिलते हैं।

मोटापे के खतरे को कम करेगी ग्रीन टी

ग्रीन टी पीने से मोटापे का खतरा कम होता है। साथ ही तबीयत बिगाड़ने वाले अन्य कारकों को खत्म करने में भी ग्रीन टी सहायक है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक शोध में इस बात का खुलासा हुआ है। पत्रिका न्यूट्रिशनल बॉयोकेमेस्ट्री में प्रकाशित शोध के अनुसार ग्रीन टी का सेवन करने से वजन कम करने में मदद मिलती है। वैज्ञानिकों ने एक चूहे पर अध्ययन किया। एक चूहे को खाने में दो फीसदी ग्रीन टी दी गई। इस दौरान पाया गया कि ग्रीन टी नहीं लेने वाले चूहों की तुलना में यह चूहा ज्यादा स्वस्थ था और उसके वजन में भी निरंतर रूप से कमी आई। इस शोध के परिणाम से उत्साहित वैज्ञानिक डायबिटीज और हृदय रोगों में ग्रीन टी के फायदों के बारे में पड़ताल करेंगे। शोध के दौरान पाया गया कि ग्रीन टी का सेवन करने वाले चूहों की आंतों में किसी भी तरह की समस्या नहीं हुई। साथ ही उनकी आंतों में अच्छे बैक्टीरिया की संख्या बढ़ी, जो पाचन प्रक्रिया को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। इसके साथ ही आंतों की दीवारों में लीकेज की समस्या भी दूर हुई। अमेरिकी ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता रिचर्ड ब्रूनो ने बताया कि ग्रीन टी आंतों में अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ावा देकर पाचन प्रक्रिया का दुरुस्त करती है जिससे मोटापे के खतरे में कमी आती है। ब्रूनो ने बताया, कुछ लोग ग्रीन टी को वजन घटाने में सहायक बताते हैं तो वहीं कुछ वैज्ञानिक इससे सहमत नहीं हैं। हमने इस शोध में यह जानने की कोशिश की कि ग्रीन टी वजन को बढ़ने से कैसे रोकती है। ग्रीन टी में केटचिन्स होते हैं, जो सूजन को कम करने, कैंसर को रोकने और हृदय व लीवर संबंधी समस्याओं को दूर करने में सहायक है।

स्टाइलिश दिखने के लिए जैकेट नहीं अब पहनें शैकेट

पिछले कुछ समय से डेनिम काफी टेंड में है। इसकी खासियत यह है कि हर उम्र के युवा पर फबता है। डेनिम के बढ़ते क्रेज को देखकर ही आजकल डेनिम शर्ट जैकेट काफी चलन में है। आप डेनिम शर्ट जैकेट को व्हाइट टी या पोलो शर्ट के साथ पेयर करें। अक्सर लोग स्टाइलिश दिखने के लिए जैकेट पहनते हैं। लेकिन अब जैकेट का स्टाइल काफी पुराना हो गया है, आजकल शैकेट का स्टाइल काफी चलन में है। अब आप यह सोच रहे होंगे कि यह शैकेट क्या है? तो हम आपको बता दें कि शैकेट का अर्थ है शर्ट जैकेट। शर्ट की तरह दिखने वाली यह जैकेट हर उम्र के पुरूष पर फबती है। तो चलिए जानते हैं कई तरह की शर्ट जैकेट और उसके स्टाइलिंग के बारे में-

मिलिटी शर्ट जैकेट: मिलिटी शर्ट जैकेट खाकी व ग्रीन कलर में काफी पॉपुलर है। इसे आप टेलर्ड टैकपैंट से लेकर व्हाइट लेदर टेनर्स के साथ टीमअप कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह टीशर्ट के साथ-साथ शर्ट के उपर भी काफी जंचता है। चूंकि मिलिटी शर्ट जैकेट के कलर्स काफी अलग होते हैं, इसलिए जब भी आप इसे पहनें तो एक ही कलर को न पहनें। मसलन, अगर आप ग्रीन मिलिटी स्टाइल शर्ट जैकेट पहन रहे हैं तो इसे नैवी या ग्रे चिनोज के साथ पहनना अच्छा विचार हो सकता है।

डेनिम शर्ट जैकेट: पिछले कुछ समय से डेनिम काफी टेंड में है। इसकी खासियत यह है कि हर उम्र के युवा पर फबता है। डेनिम के बढ़ते क्रेज को देखकर ही आजकल डेनिम शर्ट जैकेट काफी चलन में है। आप डेनिम शर्ट जैकेट को व्हाइट टी या पोलो शर्ट के साथ पेयर करें। चूंकि आजकल डबल डेनिम लुक भी काफी पसंद किया जा रहा है तो आप डेनिम शर्ट जैकेट के साथ डेनिम जींस पहनें। हालांकि इस बात का ध्यान रखें कि दोनों के शेड्स में थोड़ा फर्क अवश्य हो। मसलन,

लाइट कलर डेनिम शर्ट जैकेट पहन रहे हैं तो जींस का कलर थोड़ा डार्क होना चाहिए।

आउटडोर शर्ट जैकेट: लाइक्रा और नाइलॉन फैब्रिक की मदद से बनी आउटडोर शर्ट जैकेट काफी हद तक स्पोर्टसवियर की तरह डिजाइन की जाती है। यह बोल्ड व न्यूटल दोनों तरह के कलर में अवेलेबल है। ऐसे में आप मौसम में अनुरूप इन्हें चुन सकते हैं। आउटडोर शर्ट जैकेट में कोबेल्ट ब्लू और चेरी रेड को ऑरेंज, ग्रीन व नेवी के साथ मिक्सअप पहन सकते हैं।

नाश्ते में बनाएं स्टफ्ड इडली

आपने सांभर इटली तो खाई होगी, लेकिन क्या आपने कभी स्टफ इटली खाई है। आज हम आपको बताएंगे रेसिपी

सामग्री: चौथाई कप दही, चौथाई कप सूजी, 1/2 चम्मच नमक, 1 चम्मच ईनो, चौथाई कप पानी, एक चम्मच तेल, आधा चम्मच राई, चौथाई चम्मच जीरा, चौथाई चम्मच सौंफ, एक चम्मच साबुत धनिया, बारीक कटी प्याज, हरी मिर्च, लाल मिर्च, घनिया पाउडर, हल्दी, हींग उबले आलू, मटर, धनियापत्ती, नींबू का रस।

विधि: सबसे पहले सूजी, दही और नमक का पेस्ट बना लें। इसे 15 मिनट के लिए ढककर रख दें। इसके बाद पैन में तेल गर्म करके राई, जीरा, सौंफ, लाल मिर्च, धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर, हींग और साबुत धनिया डालकर और प्याज हल्का भून लें। इनके भूनने के बाद आलू, मटर और धनियापत्ती और नींबू का रस इसमें मिला लें। स्टफिंग को ठंडा होने दें। अब इडली के पेस्ट में पानी और ईनो डालकर अच्छे फेंटें। अब इटली के स्टेंड में इस पेस्ट को डालें और पकने दें। अब इडली को बीच में से काटकर इसमें स्टफिंग भर दें।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलवे स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार् सामजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।